मध्यप्रदेश का सबसे तेज बढ़ता सांध्य दैनिक

अमृत दर्शन

भोपाल, नर्मदापुरम एवं रायसेन से एक साथ प्रकाशित

RNI NO. 50259/90
वर्ष : 35
अंक : 275
भोपाल, शुक्रवार
20 दिसंबर 2024
पृष्ठ : 8 मूल्य : 1रु.

02 वन मेले में तीसरे दिन 20 लाख...

www.amritdarshan.com
Email : amritdarshan@yahoo.com

भारत-पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में... 06

मेंडोरी के जंगल में 52 किलो सोना मिला इसकी कीमत करीब 40 करोड़ 47 लाख

भोपाल ■ अमृत दर्शन

राजधानी में रियल एस्टेट कारोबारियों पर एक्शन के बीच भोपाल में मेंडोरी के जंगल से आयकर विभाग (आईटी) ने 52 किलो सोना बरामद किया है। इसकी कीमत करीब 40 करोड़ 47 लाख रुपए आंकी गई है। सोना एक कार में लदा हुआ था।

अधिकारियों को अंदेशा है कि जिन रियल एस्टेट कारोबारियों पर आयकर विभाग ने दबिश दी है, सोने के तार उनसे ही जुड़े हैं। सोने को कार में लादकर प्रदेश से बाहर ले जाने की तैयारी थी। पिछले तीन दिन से चल रही बिल्डरों के खिलाफ कार्रवाई के दौरान आईटी की टीम को इसके सुराग मिले थे। मेंडोरी में सोना जब्ती के दौरान आयकर अफसरों ने पूरी सावधानी बरती। 100 पुलिसकर्मियों और 30 गाड़ियों का कारकेड लेकर रेड की गई। सोना लदी गाड़ी निकल पाती, इसके पहले ही उसे पकड़ लिया गया। यह सोना एक गाड़ी में भरकर ठिकाने लगाने की तैयारी थी। आयकर और पुलिस की यह संयुक्त कार्रवाई थी।

अंतर्मना उवाच

एक तेरा होना - सबका होना है, पर मेरा ना होना - सिर्फ मेरा ना होना है..!

जब भक्त समस्याओं से घिर जाता है, या किसी मुसीबत में फंस जाता है, स्थिति- परिस्थिति जब प्रतिकूल हो जाती है, जब सहयोगियों के द्वार बंद हो जाते हैं, सगे संबंधी, इष्ट मित्र भी रूठ जाते हैं, उस समय सिर्फ और सिर्फ एक द्वार ही नजर आता है, एक ही संबल दिखाई देता है, जो सबका मालिक है, सुख दु:ख में सबका साथ देता है, सबका सहारा बनता है, विकट संकटों से निकलने के लिये भक्त उसी से गुहार लगाता है, उसी को अन्तर्मन से पुकारता है। ***द्रवित मन से, दुखी मन से - की गई गुहार, अन्तर्मन की प्रार्थना बनकर, भक्त और भगवान के बीच के फासले को मिटा देती है*** *और भक्त - भगवान के बीच वार्तालाप शुरू हो जाता है।*

जब मन की गहराईयों से या शांत और समर्पित भाव और अन्तरात्मा से जो कुछ निकलता है, वो डायरेक्ट परमात्मा तक पहुंच जाता है। *जब कभी कुछ कहने की आवश्यकता पड़े तो ये प्रार्थना पर्याप्त है -* ***हे परमात्मा, मेरे दु:खों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, विवेक-बुद्धि, सद्ज्ञान का उजास हो और आपके अनंत सुख की प्राप्ति हो। उनसे क्या मांगू - आप से मांग लेता हूँ.. आप से क्या मांगू - आपको ही मांग लेता हूँ..!!!***

■ अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज

हंगामे के बीच लोकसभा-राज्यसभा ***अनिश्चितकाल के लिए स्थगित***

अंबेडकर विवाद: इंडिया ब्लॉक का प्रदर्शन, प्रियंका बोलीं सरकार डरी

भाजपा सांसद बोले- राहुल ने गलत व्यवहार किया, निलंबन की मांग

नई दिल्ली ■ एजेंसी

संसद के शीतकालीन सत्र का शुक्रवार को आखिरी दिन था। लोकसभा-राज्यसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। उधर अंबेडकर विवाद पर विपक्ष ने आज फिर संसद के बाहर प्रदर्शन किया। विपक्षी सांसदों ने विजय चौक से संसद भवन तक मार्च निकाला। प्रियंका गांधी इसमें शामिल हुईं। राहुल आज नहीं दिखे।

राहुल के खिलाफ कल एफआईआर हुई थी। दरअसल मकर गेट पर पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच धक्का-मुक्की हो गई थी। ओडिशा के बालासोर से सांसद प्रताप सारंगी और फर्रुखाबाद से भाजपा सांसद मुकेश राजपूत चोटिल हो गए। दोनों नेताओं के सिर में चोट लगी, जिसके बाद उन्हें भर्ती कराया गया। दोनों सांसदों ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर धक्का देने का आरोप लगाया था। दोनों सांसदों की हालत स्थिर है। बीजेपी ने राहुल के खिलाफ हत्या की कोशिश, धमकाने, धक्का देने के आरोप समेत बीएनएस की 7 धाराओं में पुलिस को शिकायत दी थी। हालांकि, पुलिस ने धारा- 109 (हत्या की कोशिश) हटाकर सिर्फ 6 धाराओं में एफआईआर में दर्ज की है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, यह सरकार डरी हुई है। यह सरकार अडाणी मामले पर चर्चा करने से डरती है। उन्हें पता है कि अंबेडकर जी के लिए उनकी सच्ची भावनाएं सामने आ चुकी हैं। इसलिए, अब वे विपक्ष से डरे हुए हैं क्योंकि हम इस मुद्दे को उठा रहे हैं। इस मामले से राष्ट्रहित जुड़ा हुआ है। हमारा संविधान अंबेडकर जी, इस देश के लोगों और हमारे स्वतंत्रता संग्राम ने दिया है। उनका ऐसा अपमान भारत बर्दाश्त नहीं करेगा।

निशिकांत दुबे की राहुल को कोई पछतावा नहीं

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा, मैंने राहुल गांधी को मकर गेट पर चढ़ते देखा। हमने उन्हें जगह देने की कोशिश की। ऊपर चढ़ने के बाद, उन्होंने प्रताप सारंगी, संतोष पांडे को धक्का दिया जो हमारे बगल में खड़े थे। मुकेश राजपूत को धक्का दिया गया और जो लोग वहां खड़े थे, उन सभी को धक्का दिया गया। पहली बार, मैंने इस पार्टी का घिनौना चेहरा देखा। उसके बाद, उन्हें कोई पछतावा नहीं हुआ, वह निंदनीय है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने राहुल गांधी को संसद से निलंबित करने की मांग की है।

लोकसभा स्पीकर बोले- गेट पर प्रदर्शन न करें: लोकसभा में सुबह 11 बजे कार्यवाही शुरू होते ही स्पीकर ओम बिरला ने कहा कि संसद गेट पर प्रदर्शन करना सही नहीं है। इसके बाद लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

धक्का-मुक्की मामले की जांच क्राइम ब्रांच को सौंपी जाएगी: सूत्रों के मुताबिक, संसद मामले की जांच और दोनों मामलों की जांच क्राइम ब्रांच को सौंपी जाएगी।

मप्र विधानसभा में संविधान की प्रतियां लेकर पहुंचे कांग्रेस विधायक

विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

भोपाल। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र का आज अंतिम दिन था। कांग्रेस विधायक आज संविधान की प्रतियां लेकर विधानसभा पहुंचे। वे तीन दिन पहले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के संसद में डॉ. अंबेडकर पर दिए गए बयान का विरोध जताया। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- बीजेपी द्वारा संविधान का अपमान किया जा रहा है। संविधान निर्माता के बारे में गलत शब्द कहे गए। राहुल पर दर्ज झूठा प्रकरण वापस लिया जाए। संसद की घटना को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष ने सदन में हंगामा किया। दोनों के सदस्य आसंदी के पास पहुंचकर नारेबाजी करने लगे। इसके बाद विधानसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई।

सीएम ने आईएएस सर्विस मीट का किया शुभारंभ, बोले- जो मनमोहन को नहीं मालूम था, वह चाय वाले को पता था

इंदौर में 1249 करोड़ के विकास कामों की देंगे सौगात

भोपाल ■ अमृत दर्शन

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत ने आज प्रशासन अकादमी में तीन दिवसीय आईएएस सर्विस मीट का शुभारंभ किया। इस मौके पर सीएम ने कहा कि पढ़े-लिखे होने के बावजूद मनमोहन सिंह को नहीं मालूम था कि जीरो बैलेंस पर अकाउंट खुल सकता है। लेकिन ये चाय वाले को मालूम था। सीएम ने श्रीमद् भागवत का एक दृष्टांत भी सुनाया।

सीएम ने कहा- कर्म तो सब लोग करते हैं, भाग्य परमात्मा देता है। आपने इस मार्ग पर चलते हुए न केवल कर्म किया बल्कि भाग्य भी पाया। इतने बड़े देश की, इतनी विविधता और चुनौतियों के बीच, हमारे देश की दुनिया में जो पहचान बनी है, उसमें सबसे बड़ी भूमिका आईएएस अधिकारियों की है। यह निश्चित रूप से हमारे लिए गौरवान्वित करने वाली बात है।

सीएम डॉ. यादव आज इंदौर में 1 हजार 249 करोड़ के विकास कामों की सौगात देंगे। वे खजराना गणेश मंदिर भी जाएंगे और यहां पर भी निर्माण कामों का लोकार्पण करेंगे। सीएम महू में बीआर अम्बेडकर यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में शामिल होंगे।

जयपुर में भीषण हादसा

एलपीजी टैंकर फटने से लगी आग 8 जिंदा जले, दो दर्जन लोग झुलसे

जयपुर। राजस्थान के जयपुर में शुक्रवार सुबह पेट्रोल पंप के बाहर ट्रक की टक्कर के बाद लगी भीषण आग में आठ लोगों की मौत हो गई। जयपुर-अजमेर हाईवे पर एक ट्रक के दूसरे ट्रकों से टकराने के बाद आग लग गई। आग शहर के भांकरोटा इलाके में मौजूद पेट्रोल पंप तक फैल गई। आग लगने की सूचना मिलने पर 20 दमकल गाड़ियां आग बुझाने के लिए पहुंचीं। पुलिस ने घायलों को जयपुर के सवाई मान सिंह अस्पताल में भर्ती कराया है। करीब 40 वाहन आग की चपेट में आ गए। सीएम भजन लाल शर्मा भी पीड़ितों से मिलने अस्पताल पहुंचे।

पीएम मोदी ने जताया दुख

जयपुर अग्निकांड पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गहरा दुख जताया है। इस हादसे में मरने वालों के परिवार वालों को दो लाख रुपए की आर्थिक मदद करने की घोषणा की है।

हरियाणा के पूर्व सीएम ओम प्रकाश चौटाला का निधन

नई दिल्ली। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और इंडियन नेशनल लोकदल के प्रमुख ओम प्रकाश चौटाला का आज 89 साल की उम्र में गुरुग्राम स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। चौटाला का निधन कार्डियक अरेस्ट की वजह से हुआ है। चौटाला को आखिरी बार सार्वजनिक तौर पर हरियाणा विधानसभा चुनाव के दौरान 5 अक्टूबर को देखा गया था। वह सिरसा के एक पोलिंग बूथ पर वोट डालने के लिए पहुंचे थे।

संक्षिप्त समाचार

डेढ़ लाख की अफीम के साथ तस्कर गिरफ्तार

भोपाल। राजधानी भोपाल की हनुमानगंज थाना पुलिस ने एक अफीम तस्कर को गिरफ्तार कर उसके के कब्जे से डेढ़

लाख कीमत की आधा किलो अफीम जप्त की है। टीआई हनुमानगंज अवधेश सिंह भदौरिया ने बताया की बीते दिन मुखबिर से मिली सूचना पान मंडी के पास काले रंग का बैग लेकर खड़े एक संदिग्ध व्यक्ति को घेरांबदी कर पकड़ा गया था। पूछताछ में उसकी पहचान राहुल यादव पिता भैरोलाल यादव (27) निवासी ग्राम डाबला गुर्जर कुए के पास थाना श्यामगढ मदसौर हाल पता पंतजलि परिसर गाधीनगर भोपाल के रुप में हुई। तलाशी लेने पर उसके पास मौजूद बैग में आधा किलो अफीम बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट का मामला कायम कर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। बताया गया है की आरोपी यह नशीला पदार्थ मदंसौर से लेकर आया था, और इसे किसी को डिलेवर करने की फिराक में था। पुलिस आरोपी से राजधानी में फैले उसके नेटवर्क के बारे में आगे की पूछताछ कर रही है।

टॉयलेट कर रहे युवक का पॉच दिन पहले खरीदा ई-रिक्शा हुआ चोरी

भोपाल। टीटी नगर थाना इलाके में एक ई-रिक्शा चालक को टायलेट करने के लिये जाना महंगा पड़ गया। जल्दबाजी में वह चाबी रिक्शा में ही लगी छोड़ गया था। जब वह वापस आया तब तक अज्ञात बदमाश उसका रिक्शा चोरी कर ले जा चुका था। पुलिस के अनुसार साउथ टीटी नगर में रहने वाले विनोद विश्वकर्मा (32) ने पॉच दिन पहले ही खुद का इलेक्ट्रिक रिक्शा खरीदा था, और उसे वह स्वंय ही चलाता था। 15 दिसंबर की रात करीब 11 बजे वह रिक्शा लेकर न्यू मार्केट से माता मंदिर की और जा रहा था। टीनशेड स्थित बस स्टाप के पास सड़क किनारे रिक्शा खड़ा कर उसमें चाबी लगी छोड़कर पास ही टायलेट करने चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह वापस लौटा तो देखा की उसका रिक्शा गायब था। अपने स्तर पर दो दिनों तक वह रिक्शा तलाश करता रहा लेकिन रिक्शे का कुछ पता नहीं चलने पर वह थाने पहुंचा और रिपोर्ट दर्ज कराई।

एम्स अस्पताल से जूनियर डॉक्टर की बाइक चोरी

भोपाल। बागसेवनिया स्थित एम्स अस्पताल में पदस्थ एक जूनियर डॉक्टर की बाइक चोरी चली गई। जानकारी के मुताबिक फरियादी निशांत वरलानी (24) ने लिखित शिकायत करते हुए पुलिस को बताया कि वह मूल रुप से अजमेर राजस्थान के रहने वाले हैं। फिलहाल वह एम्स अस्पताल में जूनियर डाक्टर हैं, और एम्स कैंपस स्थित हॉस्टल में रहते हैं। रविवार को उन्होंने अपनी बाइक एम्स गेट नंबर दो के सामने वाली रोड पर खड़ी की और यशोदा होम्स में रहने वाले दोस्त से मिलने चले गए। थोड़ी देर बाद जब वह वापस आये तो देखा की उनकी बाइक चोरी हो चुकी थी। काफी तलाश करने के बाद भी बाइक की कोई जानकारी न मिलने पर वह थाने जा पहुंचे। शिकायत मिलने पर पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है।

शराब के लिये अड़ीबाजी, रकम न देने पर की मारपीट

भोपाल। छोला मंदिर इलाके में दो बदमाशों ने शराब पीने के लिये युवक पर अड़ीबाजी की। जब युवक ने रकम देने से इंकार किया तब आरोपियो ने उसके साथ जमकर मारपीट कर दी। पुलिस के अनुसार विकेश वंशकार (31) ने बताया कि वह विदिशा जिले का रहने वाला है। वह बाइक से छोला विश्राम घाट रोड से होता हुआ अपने परिचित से मिलने जा रहा था। अंडर ब्रिज के पास उसे परिचित मलखान और शेरू बाइक से जाते मिले। उसे रोकने बाद मलखान उसकी बाइक पर बैठ गया और शराब पीने के लिए पांच सौ रुपये मांगने लगा। विकेश ने जब उसे पैसे देने से मना करते हुए बाइक से उतरने को कहा तब मलखान ने छुरी निकालकर उसकी गर्दन पर मारने का प्रयास किया। विकेश ने खुद को बचाया लेकिन फिर भी मामूली घाव आ गया। बाद में मलखान शेरू के साथ बाइक पर बैठकर भाग गया। मौके पर मौजूद लोगों ने विकेश की मरहम पट्टी कर दी उस समय उसने पुलिस में शिकायत नहीं की थी। अगले दिन उसने पुलिस से शिकायत की।

ट्रैक्टर चालक के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज

भोपाल। अशोका गार्डन थाना पुलिस ने इंडस्ट्रीयल एरिया में तेज रफ्तार ट्रैक्टर की टक्कर से हुई मैजिक चालक की मौत के मामले में ट्रैक्टर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया हैं। थाना पुलिस के अनुसार रूप नगर झुग्गी बस्ती में रहने वाला संजय (43) मैजिक वाहन चलाता था। बीते मंगलवार सुबह करीब छह बजे थाना इलाके में उसके मैजिक को लोहे का माल ढोने में लगे ट्रेक्टर ने टक्कर मार दी थी।

भोपाल। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल द्वारा तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। लोक शिक्षण संचालनालय स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्राओं ने भाग लिया। छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम को दर्शकों ने जमकर सराहा। यह कार्यक्रम 20,21 एवं 22 दिसंबर 2024 तक चलेगा। राष्ट्रीय बालरंग के कार्यक्रम में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक झलक दिखाई दी। आयोजन को देखने के लिए बड़ी संख्या में दर्शकों के पहुंचने का सिलसिला जारी है।

आर्गेनिक उत्पाद के प्रति लोगों में आकर्षण रहा

वन मेले में तीसरे दिन 20 लाख रुपए के वनोपज हर्बल उत्पाद से निर्मित औषधियों की ब्रिकी हुई

भोपाल ■ अमृत दर्शन

अंतर्राष्ट्रीय वन मेले में भोपाल बल्कि आस पास के जिलों से भी बड़ी संख्या में लगभग 30 हज़ार लोगों ने मेले में उत्सुकता से भाग लिया और मेले का लुत्फ़ उठाया। आज तीसरे दिन तक लगभग 20 लाख रूपए के वनोपज हर्बल उत्पाद से निर्मित औषधियों की बिक्री हो चुकी है। मेले में स्थापित ओपीडी में लगभग 200 से अधिक आगंतुको ने निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया। शिविर में सुबह 45 एवं शाम 45 आयुर्वेद चिकित्सकों तथा अनुभवी वैद्य ने अपनी सेवाएँ प्रदान की। ओ.पी.डी. में आयुर्वेदिक चिकित्सकों और अनुभवी वैद्य द्वारा निःशुल्क परामर्श मेले के अंतिम दिन तक जारी रहेगा। लोग लेमन ग्रास, जंगली अदरक, एलोवेरा और आंवला, जंगली अदरक, एवं अन्य वनोपज से बने उत्पादों को जानने एवं खरीदने में काफी रूचि ले रहे है। इस बार मेले में आये आर्गेनिक उत्पाद लोगों का आकर्षण अपने और खींच रहे है इससे आर्गेनिक क्षेत्रों में शामिल हमारे वनांचलों में निवासरत समुदाय भी प्रोत्साहित हो रहे है।

प्रधानमंत्री वन धन केन्द्रों के द्वारा माहुल एवं अन्य पत्तों से बनाए जा रहे दोना-पत्तल जो की सिंगल यूज़ प्लास्टिक का एक अचूक विकल्प है भी लोगों में अपनी विशेष छाप छोड़ रहे है। लोगों का दोना-पत्तल के प्रति उत्साह एवं लगाव को देखते हुए पर्यावरण के प्रति हो रहे दुष्प्रभाव को रोकने कि दिशा में अनूठा प्रयास है। मेले में उज़बेकिस्तान एवं ईथोयोपिया देश के प्रतिनिधियों द्वारा मेले का भ्रमण किया गया एवं इस आयोजन की प्रशंसा की गयी। लघु वनोपज से महिला सशक्तिकरण विषय पर 2 दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन अपरमुख्य सचिव, वन अशोक बर्णवाल ने किया। इस अवसर पर वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों भी उपस्थिति थे।

कार्यशाला में ऑस्ट्रेलिया केविषय-विशेषज्ञ ने भी भाग लिया। मध्यप्रदेश के अलावा देश के अन्य राज्यों में उत्तराखण्ड, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ एवं कर्नाटक के विषय-विशेषज्ञ, एकेडेमिक एवं इंडस्ट्री एक्सपर्ट शामिल हुए। अपर मुख्य सचिव वन अशोक बर्णवाल ने कहा कि म.प्र. राज्य लघु वनोपज संघ द्वारा आयोजित यह मेला वनवासियों, ग्रामीणों एवं विशेष तौर पर महिलाओं के आर्थिक विकास का अद्भुत समायोजन है। प्रदेश में लघु वनोपज संग्रहण कार्य में लगभग 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी है। आज की कार्यशाला से प्राप्त होने वाले निष्कर्ष पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा की मैदानी स्तर पर वन संरक्षण, आयुर्वेदिक दवाइयों के निर्माण एवं उसमे महिलाओं के योगदान से उनके आर्थिक रूप से सशक्त करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि वन धन केन्द्रों में किये जा रहे मूल्य संवर्धन के कार्य एवं उनके उत्पादों की पैकेजिंग को आकर्षक रूप देकर विपणन को बढ़ावा दिया जा रहा है। वनोउपज संघ के एमडी बिभाष कुमार ठाकुर ने कहा कि दो दिवसीय कार्यशाला में लघु वनोपज के विनाश विहीन विदोहन के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण आंचलों में जनजातीय महिलाओं द्वारा उनके योगदान पर देश-विदेश में हुए विभिन्न अनुसंधानों की जानकारी मिलेगी एवं हम सभी निश्चित ही इससे लाभान्वित होंगे। कार्यशाला से इस क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के सशक्तिकरण में सहयोग प्राप्त होगा।

मेला प्रांगण में कल सुबह 11 बजे से रात्रि 10 बजे तक रंगारंग कार्यक्रम चलते रहे। मेले में आयोजित इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक प्रतियोगिता में लगभग 7विद्यालयों से 25से भी अधिक छात्र छात्राओं ने अपनी अद्भुत कला का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र - छात्राओं को पुरस्कृत किया गया एवं उनकी विलक्षण प्रतिभा को सराहा गया। मेले में दिनेश कुमार धौलपुरे (कबीर भजन गायक) एवं आर्केस्ट्रा (तिरुपा इंडस्ट्रीज) की प्रस्तुति कालोगों नेभरपूर आनंद लिया।

आज के कार्यक्रम

प्रात: 11-00 बजे से दोपहर 2-30 बजे तक सोलो और ग्रुप में गायन का कार्यक्रम आयोजित होगा इस आयोजन में कक्षा 1 से 4 तक, 5 से 8 एवं 9 से 12 तक तीन ग्रुप में आयोजित है। इसका पंजीयन प्रथम आवे प्रथम पावे के आधार पर होगा। सायं 5-00 बजे से असलम इब्राहीम शेख़ द्वारा आर्केस्ट्रा की प्रस्तुति दी जाएगी। सायं 7-30 बजे से एल.एन. आयुर्वेद कॉलेज द्वारा प्रायोजित सूफ़ी बैंड (जेर्री एंड क्लेक्टिव्स) कार्यक्रम होगा।

40वां नि:शुल्क नेत्र शिविर नेत्र ज्योति यज्ञ संपन्न

महापौर मालती राय ने शिविर में कंबल वितरित भी किए

भोपाल ■ अमृत दर्शन

महापौर श्रीमती मालती राय के मुख्य आतिथ्य में श्री माँ आशापुरा दरबार का 40वां नि:शुल्क नेत्र शिविर ''नेत्र ज्योति यज्ञ'' संपन्न हुआ।

महापौर श्रीमती मालती राय के मुख्य आतिथ्य में गुरूवार को कोहेफिजा स्थित श्री माँ आशापुरा दरबार द्वारा आयोजित 40वां नि:शुल्क नेत्र शिविर ''नेत्र ज्योति यज्ञ'' संपन्न हुआ। महापौर श्रीमती मालती राय ने शिविर में आये गरीब, असहाय लोगों को कंबल वितरित किये और श्री माँ आशापुरा दरबार द्वारा निरंतर नेत्र शिविरों के आयोजनों को अनुकरणीय उदाहरण निरूपित करते हुए माँ आशापुरा दरबार की संस्थापिका सुश्री गीता माता एवं अन्य सदस्यों के प्रति आभार भी व्यक्त किया। इस अवसर पर श्री माँ आशापुरा दरबार की संस्थापिका सुश्री गीता माता, महापौर परिषद के सदस्य मनोज राठौर, पार्षद श्रीमती प्रियंका मिश्रा सहित बड़ी संख्या में लाभार्थी व गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

मान्यता के लिए निजी स्कूल 23 से कर सकेंगे आवेदन

भोपाल। प्रदेश में संचालित कक्षा एक से 8 तक के निजी विद्यालय शिक्षा का अधिकार अधिनियम अंतर्गत नवीन मान्यता एवं मान्यता नवीनीकरण के लिये 23 दिसम्बर से 23 जनवरी तक ऑन लाइन आवेदन कर सकेंगे। राज्य शिक्षा केन्द्र ने मान्यता आवेदन की प्रक्रिया को सरलीकृत एवं पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से आरटीई एमपी मोबाइल ऐप तैयार किया है। इसके माध्यम से अशासकीय स्कूल स्वयं अपने मोबाइल के द्वारा आवश्यक जानकारी दर्ज कर जरूरी फोटाग्राफ तथा दस्तावेज अपलोड करते हुये मान्यता के लिये ऑनलाइन आवेदन कर सकेगे। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र हरजिंदर सिंह ने सभी जिला कलेक्टर्स और मैदानी अधिकारियों को पत्र के माध्यम से निर्देशित किया है कि वे इस सबंध में अपने जिले के सभी निजी विद्यालयों को अवगत कराते हुए नवीन मान्यता अथवा पूर्व मान्यता के नवीनीकरण के लिये निर्धारित समय सीमा में कार्यवाही पूर्ण कराये।

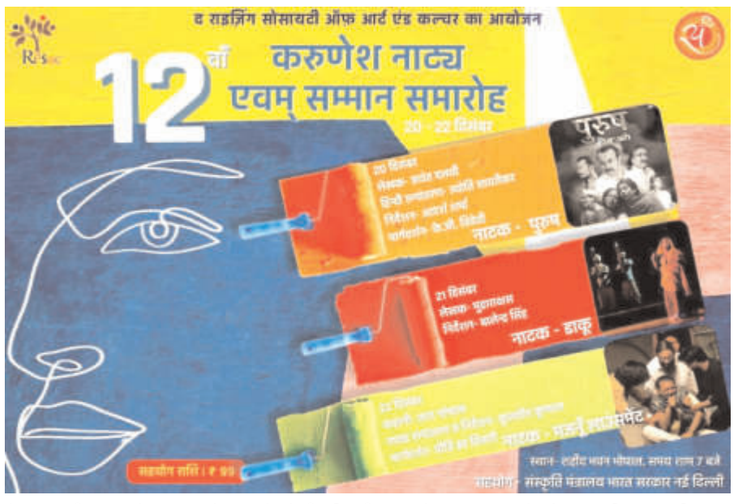

भोपाल। शहीद भवन में शुक्रवार से शुरू हो रहे तीन दिवसीय करुणेश नाट्य समारोह में कल शनिवार 21 दिसंबर को मेरे द्वारा निर्देशित और मुद्राराक्षस लिखित प्रसिद्ध नौटंकी शैली का नाटक डाकू का आनंद लेने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं।

तीन बिल्डरों पर आयकर विभाग की छापेमारी

300 करोड़ के अघोषित निवेश और बड़ी मात्रा में नकदी बरामद

भोपाल ■ अमृत दर्शन

विभाग को इन बिल्डरों से जुड़े अघोषित निवेश का पता चला है, जिसमें लगभग 300 करोड़ रुपये का निवेश शामिल है। छापेमारी के दौरान 25 बैंक लॉकरों और पांच करोड़ रुपये नकद के साथ ज्वेलरी भी बरामद हुई है।

मध्य प्रदेश में भोपाल के तीन बिल्डरों के यहां जारी आयकर विभाग की छापेमारी गुरुवार को भी जारी रही। विभाग ने तीनों बिल्डरों त्रिशूल कंस्ट्रक्शन कंपनी, क्वालिटी बिल्डर और ईशान बिल्डर के 52 ठिकानों पर बुधवार को रेड शुरू की थी। विभागी कार्रवाई में अघोषित रूप से विभिन्न कंपनियों में लगभग 300 करोड़ रुपये के निवेश की जानकारी मिली है। ये कंपनियां भोपाल, इंदौर के अतिरिक्त जबलपुर, कटनी और रायपुर की हैं। निवेश में छत्तीसगढ़ के बड़े खनन कारोबारी का नाम भी सामने आ रहा है।

बता दें कि आयकर विभाग की ओर से भोपाल में 49, इंदौर में दो और ग्वालियर में एक स्थान पर छापेमारी की गई है। ये ठिकाने तीनों बिल्डरों से जुड़े हैं।

त्रिशूल कंस्ट्रक्शन कंपनी के राजेश शर्मा और उनके साथियों द्वारा भोपाल के नर्मदापुरम रोड स्थित सहारा सिटी में 110 एकड़ जमीन खरीदे जाने की जानकारी मिली है। यह सौदा आयकर विभाग के निशाने पर है। दस्तावेजों की जांच में कई अनियमितताएं उजागर हुई हैं।

25 बैंक लॉकर और नकदी बरामद

आयकर विभाग को अब तक की कार्रवाई में 25 बैंक लॉकर मिले हैं, जिनमें बड़ी मात्रा में नकदी और ज्वेलरी छिपाई गई है। विभाग को पांच करोड़ रुपये नकद भी बरामद हुए हैं। हालांकि, इन लॉकरों में मिली नकदी और ज्वेलरी का मूल्यांकन अभी बाकी है।

एम्स भोपाल की डॉ. कृष्णप्रिया को रक्त उत्पादों के विकिरण पर शोध के लिए इंट्राम्यूरल अनुदान

भोपाल ■ अमृत दर्शन

एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के निर्देशन में ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन और ब्लड बैंक विभाग की रेजिडेंट चिकित्सक, डॉ. कृष्णप्रिया ने अपने शोध के लिए एक इंट्राम्यूरल अनुदान प्राप्त किया है। यह शोध रक्त उत्पादों पर विकिरण (इर्रेडिएशन) से जुड़ा है और मरीजों की सुरक्षा व इलाज के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए किया जा रहा है। यह उपलब्धि एम्स भोपाल की नई खोज और शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दिखाती है।

प्रो. सिंह ने डॉ. कृष्णप्रिया को इस उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए कहा, डॉ. कृष्णप्रिया की यह सफलता हमारे संस्थान के लिए गर्व की बात है। यह साबित करती है कि हमारे छात्र मेडिकल साइंस में नई खोज कर सकते हैं और मरीजों की देखभाल को बेहतर बना सकते हैं। शोध और नवाचार को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकता है।

एम्स भोपाल में ऐसे अनुदान कड़ी चयन प्रक्रिया के बाद ही दिए जाते हैं। ये अनुदान छात्रों और शोधकर्ताओं को अपने नए विचारों को साकार करने का मौका देते हैं। डॉ. कृष्णप्रिया की शोध से ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन में नई जानकारी मिलने की उम्मीद है, जो अन्य छात्रों को भी शोध के लिए प्रेरित करेगा।

अंतर्राष्ट्रीय डेलिगेट्स के साथ मेडिकल टूरिज्म बढ़ाने पर हुआ मंथन

मध्यप्रदेश बनेगा मेडिकल और वेलनेस टूरिज्म का केंद्र : प्रमुख सचिव शुक्ला

भोपाल ■ अमृत दर्शन

प्रमुख सचिव, पर्यटन और संस्कृति विभाग एवं प्रबंध संचालक, म.प्र. टूरिज्म बोर्ड शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि मध्यप्रदेश आने वाले समय में मेडिकल और वेलनेस टूरिज्म का केंद्र बनेगा। मध्यप्रदेश पर्यटन गन्तव्य स्थल अपने आप में वेलनेस स्थल है। यहां प्राकृतिक सुंदरता और शांति के साथ आयुर्वेदीय जड़ी बूटियों और औषधीय वनोपज की पर्याप्त उपलब्धता है। प्रमुख सचिव शुक्ला कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में स्वास्थ्य पर्यटन और वेलनेस से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के समूह और राज्य के हेल्थ, मेडिकल और टूरिज्म के प्रमुख हितधारकों को संबोधित कर रहे थे। शुक्ला ने कहा कि पर्यटन के साथ-साथ स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता के दृष्टिगत मध्यप्रदेश अंतर्राष्ट्रीय स्तर की सेवाएं देने के लिए सक्षम है। विदेश और अन्य राज्यों की तुलना में चिकित्सा सुविधाएं काफी सस्ती हैं।

प्रमुख सचिव शुक्ला ने चिकित्सा और पर्यटन के सभी हितधारकों को साझा प्रयास कर मेडिकल और वेलनेस टूरिज्म को बढ़ावा देने का आग्रह किया। उन्होंने शासन द्वारा हर संभव सहायता देने का आश्वासन भी दिया। कार्यक्रम का उद्देश्य मध्यप्रदेश में मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा देने के साथ, 'मेडिकल और वेलनेस' के हित धारकों के बीच सहयोग के अवसरों को सृजित करना है। कार्यशाला में इस बात पर भी बल दिया गया कि प्रदेश के सभी स्वास्थ्य संस्थाओं, वहाँ उपलब्ध सेवाओं तथा उपचार के सम्पूर्ण पैकेज की जानकारी वेबसाइट पर देने से बेहतर प्रचार प्रसार होगा। विदेशी प्रतिनिधियों ने उनके देश के साथ स्वा करने की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला। इथोपिया और उज्बेकिस्तान से आए सभी डेलीगेट्स शुक्रवार को इंदौर में मेडिकल और वेलनेस की सुविधाओं और आवश्यक अधोसंरचनाओं पर अवसरों एवं संभावनाओं पर हितधारकों से चर्चा करेंगे।

बैठक में उज्बेकिस्तान गणराज्य स्वास्थ्य मंत्रालय के उप प्रमुख शोखोबुद्दीन गुल्यामोव, अब्दुजामोल जुराऐव, एलूबाबोर बूनो और इथियोपिया के स्वास्थ्य मंत्रालय से डॉ. आइरुसलेम बेफेकाडु येरडॉ, डॉ. टेजिना रेगास्सा शामिल हुए। उन्होंने मध्यप्रदेश में मेडिकल टूरिज्म और आवश्यक अधोसंरचना को बढ़ावा देने के प्रयासों पर चर्चा की। मध्यप्रदेश में मेडिकल और वेलनेस टूरिज्म की वर्तमान सुविधाओं एवं अवसरों पर प्रेजेन्टेशन भी दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय डेलिगेट्स ने सुबह यूनेस्को विश्व धरोहर सांची की यात्रा की और शाम को भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में अंतर्राष्ट्रीय वन मेले का अवलोकन भी किया।

3
अमृत दर्शन
भोपाल
शुक्रवार 20 दिसंबर 2024

वायु सेना की फ्लाइंग ऑफिसर बनी शहर की मुस्कान

भोपाल। मुस्कान 1 साल 5 महीने की ट्रेनिंग के बाद फ्लाइंग ऑफिसर की रैंक पर पहुंचेंगी ।कहते हैं कि पढ़ाई-लिखाई में ध्यान लगाओ, सोशल मीडिया से रहो दूर, मगर इस धारणा को गलत साबित किया है भोपाल की मुस्कान खान ने। एक मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखने वाली 25 वर्षीय मुस्कान का चयन भारतीय वायुसेना में फ्लाइंग ऑफिसर (टेक्निकल ब्रांच) के तौर पर हुआ है। बुधवार, 18 दिसंबर को वायुसेना के नतीजे घोषित किए गए। शहर की सिद्धार्थ लेक सिटी कॉलोनी में रहने वाली मुस्कान के पिता एम.एच. खान जवाहर नवोदय विद्यालय के रिटायर्ड प्रिंसिपल हैं।

केन्द्रीय विद्यालय-2 भोपाल में वार्षिक खेलकूद उत्सव का समापन

भोपाल। केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, शिवाजी नगर भोपाल में गुरूवार को वार्षिक खेलकूद उत्सव उत्साह और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। विद्यालय के क्रीडांगन में आयोजित इस विशेष आयोजन में लगभग 300 छात्रों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विजेता छात्रों को मेडल्स और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए, जिससे उनका उत्साह और भी बढ़ गया। इस उत्सव के अंतर्गत विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं जैसे रिले रेस, 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, शॉट पुट, वॉलीबॉल और गणितीय दौड़ का आयोजन किया गया। इन गतिविधियों ने छात्रों को न केवल अपनी खेल प्रतिभा दिखाने का अवसर दिया, बल्कि टीम भावना और अनुशासन का भी महत्व सिखाया।

संक्षिप्त समाचार

एसपीएस द्वारकाधाम भोपाल में 'पैडल फॉर पीस' साइक्लोथॉन कल

भोपाल। सागर पब्लिक स्कूल द्वारका धाम भोपाल में 22 दिसंबर(रविवार) को 'पैडल फॉर पीस' साइक्लोथॉन का आयोजन किया जा रहा है। स्कूल में साइक्लोथॉन का ट्रायल हुआ, जिसमें बच्चों ने साइकिल चला कर 'पैडल फॉर पीस' का संदेश दिया और प्रतिभागी बनने के लिए उत्साह बढ़ाया 7 साइक्लोथॉन लालघाटी चौराहा से रेटघाट तक के 4.5 किलोमीटर का होगा, जिसका शुभारंभ सुबह 7 बजे किया जाएगा। साइक्लोथॉन के मुख्य अतिथि भगवान सिंह कुशवाह होंगे जो 2016 में मध्यप्रदेश के पहले माउंट एवरेस्ट विजेता, विक्रम पुरस्कार विजेता, 2024 में गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक और साहसिक खेलों के विशेषज्ञ हैं। अब तक 300 से अधिक प्रतिभागियों ने पंजीकरण करा लिया , स्कूल प्रबंधन ने मुहिम से जुड़ने के लिए क्यूआर कोड जारी किया है, जिसे स्कैन कर रजिस्टर कर सकते है ।

12 महीने में बननी थी कोलार सिक्सलेन, 25 में भी पूरी नहीं

भोपाल। कोलार गेस्ट हाउस से गोल जोड़ तक करीब 15 किलोमीटर सिक्सलेन प्रोजेक्ट का काम बढ़ी हुई डेडलाइन से दो महीने पीछे चल रहा है। यह काम अक्टूबर 2024 तक पूरा होना था, लेकिन अभी भी कई छुटपुट काम बाकी हैं। ऐसे में अभी एक से डेढ़ महीना अभी और लगना है। समय सीमा में काम पूरा नहीं होने की वजह से प्रोजेक्ट की लागत में भी इजाफा हुआ है। यह 182 करोड़ रुपए थी, जो 68 करोड़ बढ़कर 250 करोड़ रुपए तक पहुंच गई है। हालांकि, राहत की बात यह है कि रोड का काम पूरा हो चुका है। सिर्फ सर्वधर्म स्थित पुल के पुराने हिस्से में एक्सपेंशन ज्वाइंट बदलने और सड़क के इस हिस्से में डामर होना बाकी है। ऐसे में दावा यह किया जा रहा है कि सड़क को इसी महीने पूरी तरह शुरू करके कोलार के लोगों को नए साल का तोहफा दिया जाएगा। मौजूदा सर्वधर्म ब्रिज के पास नया ब्रिज बनाया गया। मौजूदा ब्रिज के 4 एक्सपेंशन ज्वाइंट बदलने हैं। 2 बदल गए हैं, 2 के लिए काम जारी है। ये काम नवंबर में शुरू हुआ। 1 महीने में पूरा होना था। लेकिन, एंगल बनने में समय अधिक लगने से काम लेट हुआ। दिसंबर में पूरा हो जाएगा। दो दिन में सड़क पर डामर कर इसे खोल देंगे। सिर्फ सेंट्रल वर्ज ही बचेगा... इस पूरे प्रोजेक्ट में जो काम बच रहा है वह है सेंट्रल वर्ज में पौधारोपण और उसका ब्यूटीफिकेशन। इसका जिम्मा नगर निगम को दिया है। इसके ?लिए एजेंसी तय करने निगम ने टेंडर जारी किया है इसकी टेक्निकल बिड तो खुल गई है, इसी हफ्ते फाइनेंशियल बिड खोलकर एजेंसी का निर्धारण किया जाएगा। ऐसे में उम्मीद यही है कि जनवरी में इसका काम शुरू कर दिया जाएगा।

सैफिया कॉलेज छात्र संघ ने आयोजित की फ्रेशर्स पार्टी

भोपाल। सैफिया कॉलेज भोपाल में गुरूवार को नवप्रवेशित छात्रों के लिए फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य नए छात्रों को रैगिंग से मुक्त करना और उन्हें कॉलेज के माहौल में सहज बनाना था। कार्यक्रम की शुरुआत जूनियर छात्रों के परिचय से हुई, जहाँ सभी छात्रों ने मंच पर आकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके बाद विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का सिलसिला शुरू हुआ, जिसमें छात्रों ने रैम्प वॉक, डांस, और क्विज प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। इन गतिविधियों के माध्यम से उन्हें कॉलेज की संस्कृति और माहौल से परिचित कराया गया।

इस आयोजन में सैफिया कॉलेज के पुराने छात्र, कॉलेज कर्मचारी, और अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी भी शामिल हुए, जिन्होंने कार्यक्रम को और भी रंगीन और रोमांचक बना दिया। पुराने छात्रसंघ अध्यक्ष जहांजेब खान का इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में अहम योगदान रहा।

8 करोड़ की चरस से जुड़ा मामला

चौंकाने वाले खुलासे

सरकारी अधिकारी बन आरोपी करते थे अवैध नशे का कारोबार

भोपाल क्राइम ब्रांच ने हाल ही में 8 करोड़ की चरस के साथ एक दंपति को गिरफ्तार किया था।

भोपाल ■ अमृत दर्शन

भोपाल क्राइम ब्रांच ने हाल ही में 8 करोड़ की चरस के साथ एक दंपति को गिरफ्तार किया था। ये दोनों करोड़ों की चरस मनाली से इंदौर लेकर जा रहे थे। वहीं अब इस मामले में आरोपियों से पूछताछ में बड़ा खुलासा हुआ है। शातिर अपराधी सरकारी अधिकारी बनकर चरस का माल खपाते थे। इसमें एक आरोपी आमिर कुरैशी के पास से पुलिस ने मध्यप्रदेश सरकार के टाउन एंड कंट्री प्लानिंग विभाग की सील लगा एक कार्ड बरामद किया था। पुलिस की जांच में पता चला कि आरोपी ने फर्जी तरीके से ये कार्ड बनाया था और इसी के दम पर वह एक साल तक मनाली से मध्यप्रदेश तक हाई क्वालिटी चरस लाने का काम कर रहा था।

बता दें कि 14 दिसंबर को क्राइम ब्रांच की टीम ने बरखेड़ा सालम जोड़ से कार सहित आरोपियों को पकड़ा था। तलाशी के दौरान कार से 8 करोड़ का चरस बरामद हुआ था। आरोपी मादक पदार्थ को मनाली से इंदौर लेकर जा रहे थे। आइकार्ड के आधार पर शातिर बदमाश कई चेकिंग प्वाइंट पार कर लेते थे, आईडी कार्ड होने की वजह से उन पर कोई शक नहीं कर पता था। ऐसे में वो बड़े आराम से अवैध मादक पदार्थ का धंधा कर रहे थे।

ऐसे पकड़ में आए आरोपी

क्राइम ब्रांच को सूचना मिली थी कि कुछ तस्कर दूसरे प्रदेश से नशे की बड़ी खेप लेकर प्रदेश में आते हैं। पुलिस ने खजूरी इलाके के बरखेड़ा सालम जोड़ पर घेराबंदी की हुई थी। इस दौरान पुलिस ने ष्ठरू- 8ष्टस्न- 8092 नंबर की एक लग्जरी कार को रोका। कार में दो पुरुष और एक महिला सवार थे। पुलिस ने पूछताछ की तो इन्होंने बताया कि भोपाल के रहने वाले हैं और मनाली घूमने गए थे। जब उनसे कार के बारे में पूछताछ की तो बताया कि ये कार उन्होंने सेकेंड हैंड खरीदी है। पुलिस ने जब कार की जांच की तो कार से 8 किलो 400 ग्राम चरस, दो लाख रुपए नगद, 5 मोबाइल फोन मिले। पुलिस ने कार में सवार आमिर कुरैशी उसकी पत्नी जाहिदा कुरैशी और प्रतीक मिश्रा को गिरफ्तार किया। 8 करोड़ रुपए कीमत की चरस के साथ पुलिस को आमिर के पास से मध्यप्रदेश सरकार के टीएंडसीपी विभाग की सील लगा कार्ड भी मिला।

राजधानी में बेख़ौफ बदमाश

तलवार और डंडे से कार में की तोड़फोड़, घटना का सामने आया वीडियो

भोपाल ■ अमृत दर्शन

राजधानी भोपाल में बदमाशों के हौसले बुलंद हैं। पुलिस की कार्रवाई के बाद भी उनमे जरा भी खौफ नहीं है। ताजा मामला शहर के हनुमानगंज थाना क्षेत्र से सामने आया है। जहां लक्ष्मी टॉकीज के पास बदमाशों ने एक कार में तलवारों से जमकर तोड़फोड़ की। बदमाशों की इस करतूत का वीडियो भी सामने आया है। फिलहाल पुलिस ने मामले में केस दर्ज नहीं किया है। फरियादी अबतक थाने नहीं पहुंचा है।

घटना का जो वीडियो सामने आया है, उसमे दो नकाबपोश बदमाश एक कर और कुछ अन्य गाड़ियों में तलवार और डंडे से तोड़फोड़ करते दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान बदमाश दाऊद और उसके साथियों पर हमले का आरोप भी लगाते हुए वीडियो में सुनाई दे रहे हैं। ऐसे में किसी पुरानी रंजिश को लेकर ही बदमाशों के द्वारा कार में तोड़फोड़ की वारदात को अंजाम दिया गया है। राजधानी भोपाल में ये पहली बार नहीं है कि इस तरह से गाड़ियों में तोड़फोड़ की गई है। इससे पहले ही इस तरह के कई मामले सामने आ चुके है, जहां बदमाशों ने बेवजह उत्पात मचाया है।

श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति के निर्विरोध अध्यक्ष बने समाजसेवी सुनील जैनाविन

भोपाल ■ अमृत दर्शन

समाजसेवी सुनील जैनाविन श्री सुपार्श्वनाथ जैन मंदिर समिति के लगातार तीसरी बार निर्विरोध अध्यक्ष बने जिनालय परिसर में हुई आमसभा बैठक में सर्वसम्मति से समाज के वरिष्ठ जनों ने मिलकर श्री जैनाविन के नाम की घोषणा की अध्यक्ष निर्वाचित होने के बाद समाज के वरिष्ठों ने स्वागत करते हुए कहा किसी भी सामाजिक संस्था को जब गतिशील नेतृत्व मिलता है तो समाज और समाज की धरोहर दोनों का विकास सुनिश्चित हो जाता हमारी मन्दिर समिति को भी सक्रिय और गतिशील पदाधिकारी मिले हैं, अत: समिति के अध्यक्ष पद की पुनरावृत्ति निसन्देह आवश्यक थी। सभी समाजजनों के इस निर्विरोध निर्णय का स्वागत करता हुए करतल ध्वनि से श्री जैनाविन का सम्मान किया पुन: निर्वाचित यशस्वी अध्यक्ष सुनील जैनाविन भोपाल उत्सव मेला समिति के महामंत्री पद के साथ भारतीय जनता पार्टी की प्रदेश कार्यकारणी में सक्रिय कार्यकर्ता के साथ राजधानी की अनेक सामाजिक व्यापारिक राजनीतिक संगठनों से जुड़ कर सदैव सक्रिय और समर्पित भाव से कार्य शील रहते हैं।

मप्र में हवाओं के रुख में बदलने से ठंड से राहत

भोपाल ■ अमृत दर्शन

राजधानी भोपाल में सर्द हवाओं से कुछ रहात मिली है। हवाओं का रुख बदलने के कारण न्यूनतम तापमान में धीरे-धीरे बढ़ोतरी होने लगी है। इससे कड़ाके की ठंड से राहत मिलने लगी है। उधर, गुरुवार को शहडोल एवं सिवनी में शीतलहर का प्रभाव रहा। हिल स्टेशन पचमढ़ी में पारा 3.3 डिग्री सेल्सियस पर रहा। मैदानी क्षेत्रों में सबसे कम 4.5 डिग्री सेल्सियस तापमान मंडला में रिकार्ड किया गया। दिन का सबसे अधिक 31 डिग्री सेल्सियस तापमान उज्जैन में दर्ज हुआ।

हवाओं का रुख बदला

मौसम विज्ञानियों के मुताबिक, अलग-अलग स्थानों पर बनी चार मौसम प्रणालियों के प्रभाव से हवाओं का रुख बदल गया है। इस वजह से न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होने की संभावना है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार वर्तमान में उत्तर भारत के ऊपर जेट स्ट्रीम बना हुआ है। बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र भी बना है। अरब सागर में हवा के ऊपरी भाग में चक्रवात है। पाकिस्तान और उससे लगे जम्मू पर पश्चिमी विक्षोभ भी द्रोणिका के रूप में सक्रिय है। दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान और उससे लगे पाकिस्तान पर एक प्रेरित चक्रवात बना हुआ है।

रात के तापमान में कमी आने की संभावना नहीं

पूर्व वरिष्ठ मौसम विज्ञानी अजय शुक्ला ने बताया कि अलग-अलग स्थानों पर सक्रिय मौसम प्रणालियों के प्रभाव से हवाओं का रुख पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी बना हुआ है। इस वजह से प्रदेश में रात का तापमान धीरे-धीरे बढ़ने लगा है। हालांकि दो दिन में पश्चिमी विक्षोभ के आगे बढ़ने पर प्रेरित चक्रवात का प्रभाव भी समाप्त हो जाएगा। इसके बाद भी बंगाल की खाड़ी में बने कम दबाव के क्षेत्र के असर से हवाओं रुख इसी तरह बना रहने के आसार हैं। इस वजह से रात के तापमान में विशेष कमी आने की संभावना नहीं है। उधर, 27 दिसंबर को एक प्रभावी पश्चिमी विक्षोभ के उत्तर भारत में आने के भी आसार हैं।

तीन दिन स्पोर्ट्स, कल्चरल एक्टिविटी पैनल डिस्कशन में हिस्सा लेंगे ब्यूरोक्रेट्स

भोपाल ■ अमृत दर्शन

तीन दिवसीय आईएएस सर्विस मीट का आयोजन आज से राजधानी में होगा। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत की मौजूदगी में सर्विस मीट का शुभारंभ प्रशासन अकादमी में होगा।

बातें नई पुरानी विषय पर मुख्य सचिव अनुराग जैन के संचालन में पैनल डिस्कशन होगा। सर्विस मीट के पहले दिन अरेरा क्लब में वॉलीबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम, पूल, बिलियर्ड, ब्रिज और 4 गुणा 50 मीटर रिले दौड़ होगी। शाम को कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में कल्चरल नाइट और डिनर होगा। इसके बाद अरेरा क्लब में रात 9:30 बजे से ट्रेजर हंट का आयोजन किया जाएगा। आईएएस अफसरों का ग्रुप फोटोग्राफ सेशन भी होगा।

21 दिसंबर को बोट रेस से शुरुआत

सुबह सर्विस मीट की शुरुआत बोट क्लब पर बोट रेस से होगी। इसके बाद टी20 फुटबॉल, कुकिंग कॉम्पिटिशन, टी 5 क्रिकेट, फन गेम, पेंटिंग, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, पूल, कैरम, बिलियर्ड, ब्रिज और अंताक्षरी का आयोजन किया जाएगा। अरेरा क्लब में ही डीजे नाइट होगी।

22 दिसंबर को होंगे ये कार्यक्रम

सुबह साइक्लिंग के बाद अरेरा क्लब में टंग आफ वॉर, क्विज, डम शिराज, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, पूल, बिलियर्ड, ब्रिज का आयोजन किया जाएगा। प्राइस डिस्ट्रीब्यूशन के साथ सर्विस मीट का समापन होगा।

अदालतों पर अनावश्यक मामलों का बोझ होगा कम

47 धाराओं के जो मामले कोर्ट तक जाते थे, उसे अफसर ही सुलझाएंगे

भोपाल ■ अमृत दर्शन

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ईज ऑफ लिविंग जन विश्वास बिल पास। पांच विभागों के 8 प्रमुख कानूनों के 47 प्रावधानों के तहत थूकने, धूम्रपान करने, गंदगी फैलाने, नाली पर कब्जा करने, पेड़ काटने या कब्जा करने जैसे कई मामलों में अब जुर्माना या दंड लगाने के बजाय पेनल्टी की कार्रवाई की जाएगी। इससे न केवल कोर्ट का समय बचेगा, बल्कि सरकारी विभागों में काम कर रहे कर्मचारियों को जेल जाने का भय भी नहीं होगा। अवैध हड़ताल या काम रोकने जैसी गतिविधियों पर रोक लगाई जा सकेगी।

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस और ईज ऑफ लिविंग की अवधारणा को साकार करने वाला 'मप्र जन विश्वास (उपबंधों का संशोधन) विधेयक' गुरुवार को विधानसभा में पारित हो गया। इस नए विधेयक के तहत, निकायों के मुख्य नगर अधिकारियों (सीएमओ) को भी कब्जाधारियों पर कार्रवाई करने का अधिकार मिलेगा। इससे निवेशकों और व्यापारियों को कार्य के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध होगा।

एमआरआई सेंटर के चेंजिंग रूम में छिपा मिला मोबाइल

जिसमें बन रहा था पत्नी का कपड़े बदलते वीडियो

भोपाल। मालवीय नगर स्थित एमआरआई सेंटर मेडी स्कैन के चेंजिंग रूम में कपड़े बदलती महिलाओं की रिकॉर्डिंग का मामला सामने में आया है। सेंटर का वार्ड बॉय चेंजिंग रूम की सीलिंग में अपना मोबाइल छुपाकर रखता था और वीडियो रिकॉर्डिंग चालू कर देता था।

मोबाइल में मिले कई अश्लील वीडिया , पति चेंजिंग रूम में सामान लेने गया तो हुआ खुलासा

सेंटर में एमआरआई जांच के लिए पहुंची महिलाएं जब जांच से पहले गाउन पहनती थीं तो उनकी रिकॉर्डिंग कर ली जाती थी। वार्ड बॉय की इस करतूत का खुलासा गुरुवार को हुआ, जब एमआरआई की जांच के सेंटर पहुंची एक महिला के पति ने चेंजिंग रूम की सीलिंग में छुपे हुए मोबाइल को पकड़ लिया। दंपती ने जब इसकी बात प्रबंधन को बताई तो वे गलती मानने और वार्ड बॉय की शिकायत करने की बजाए विवाद करने लगे, जिसके बाद भागकर पति-पत्नी ने अरेरा हिल्स थाने में शिकायत की। पुलिस ने चेंजिंग रूम को सील कर दिया है। साथ ही आरोपित वार्ड बॉय के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस पूछताछ कर रही है कि वह कब से चेंजिंग रूम में महिलाओं के वीडियो बना रहा था। और इन वीडियो को कहां भेजता था। थाना प्रभारी मनोज पटवा ने बताया कि मेडी स्केन में कार्यरत वार्ड बॉय विशाल ठाकुर मूलत- उत्तरप्रदेश के अयोध्या का रहने वाला है। वह पिछले तीन वर्षों से भोपाल के जहांगीराबाद इलाके में अपनी दीदी के घर रह रहा था। आरोपित तीन महीने से मेडी स्कैन में वार्ड बॉय का काम कर रहा था। थाना प्रभारी मनोज पटवा ने बताया कि गुरुवार दोपहर करीब दो बजे दंपती मेडी स्कैन सेंटर गए थे। यहां पत्नी की एमआरआई जांच की जानी थी। पत्नी ने चेंजिंग रूम में जाकर स्कैन के लिए गाउन पहन लिया था।

जालसाजों को बेच चुका था 250 सिम, क्राइम ब्रांच ने गुजरात से दबोचा

साइबर ठगी के लिए सिमकार्ड बेचने वाला एजेंट गिरफ्तार

भोपाल ■ अमृत दर्शन

शेयर बाजार में निवेश के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले गिरोह के एक सदस्य को भोपाल साइबर क्राइम पुलिस ने गुजरात के सूरत से गिरफ्तार किया है। आरोपित पिछले छह महीने में साइबर ठग को दो हजार रुपये प्रति सिम की दर से 250 से अधिक सिम बेच चुका था। वह कैंप लगाकर सूरत और उसके आसपास के इलाकों में सिम बेचता था। पूछताछ में आरोपी ने अभी तक करीब 250 मोबाइल सिम बेचने की बात स्वीकार की हैं। आरोपी के पास से 10 सिम कार्ड भी जब्त किए गए हैं। बता दें इस मामले में 5 अन्य आरोपियों को पहले ही क्राइम ब्रांच गिरफ्तार कर चुकी हैं।

ऐसे करता था वारदात: *पुलिस ने बताया कि पकड़ में आया एजेंट नया मोबाइल सिम कार्ड देने और पोर्ट कराने के नाम पर ग्राहकों के नाम से सिम एक्टिवेट कर लेता था। ग्राहकों से कहता था कि टेक्निकल समस्या आने से सिम एक्टिवेट नहीं हो पा रही है। उसके बाद पूर्व से एक्टिवेटेड सिम कार्ड सायबर ठगों तक पहुंचा देता था, इसके लिए वह मोटा कमीशन लेता था।*

पुलिस ने अज्ञात जालसाजों के खिलाफ धोखाधड़ी और आईटी एक्ट के विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया हैं। पकड़ में आया आशुतोष कुमार (22) मूलत- बिहार में कटिहार जिला के सेमपुरा में ग्राम दुर्गापुर कुशवाहा टोला का रहने वाला है। वह वर्तमान में सूरत में ओलपाड की साईं रेसिडेंसी में रहता था।

आरोपित दो वर्ष पहले बिहार से सूरत काम की तलाश में आया था और वहां पीओएस एजेंट के रूप में कैंप लगाकर सिम बेचने का काम करता था। भोपाल क्राइम ब्रांच ने उसे साई रेसिडेंसी, कर्सनपाडा सूरत (गुजरात) से गिरफ्तार किया है।

पांच आरोपियों की पहले ही हो चुकी है गिरफ्तारी

भोपाल सायबर क्राइम ब्रांच ने इस मामले में आरोपी रामनाथ लोधी निवासी शिवपुरी, धनीराम जाटव उर्फ शैलेंद्र उर्फ मिंटू निवासी शिवपुरी, बांभनीया शांति निवासी सूरत, परमार कमलेश भाई निवासी सूरत और प्रजापति अश्विन भाई निवासी सूरत गुजरात को गिरफ्तार किया था।

अनमोल वचन

वृक्ष अपने सिर पर गरमी सहता है पर अपनी छाया में दूसरों का ताप दूर करता है।
तुलसीदास

माया मरी न मन मरा, मर मर गये शरीर। आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर?
कबीर

सम्पादकीय

बोलने से नहीं, आत्मनिर्भर होने से भारत बनेगा विश्व गुरु

वर्तमान सत्तारुण दल भारत को अक्सर विश्व गुरु कहकर संबोधित करता है। वास्तविकता ठीक इसके विपरीत है। किसी भी देश को विश्व गुरु बनने की प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के लिए विज्ञान, तकनीक और अनुसंधान पर आत्मनिर्भर होना आवश्यक होता है। चीन और भारत की तुलना में, चीन हर क्षेत्र में भारत से बहुत तेजी के साथ आगे निकल गया है। शिक्षा, अनुसंधान, नवीन तकनीकों के विकास से चीन तीन दशक के अंदर सारी दुनिया के देशों को पछाड़कर महाशक्ति बन गया है। चीन आर्थिक निवेश, निर्यात व्यापार और तकनीकी ज्ञान से दुनिया के देशों में सुपर पावर बना है। सारी दुनिया के देशों में चीन के बिना सब सून की स्थिति बन गई है। दुनिया के सभी देशों में चीन के सस्ते माल का कोई विकल्प नहीं है। चीन हर देश के लिए अलग-अलग तरीके से समान बनाता है। भारत की होली, दिवाली, 15 अगस्त, 26 जनवरी, शादी-विवाह, बच्चों के खेल, खिलौने से लेकर हर चीज चीन में तैयार होती है। भारत के देवी-देवता और भगवान की मूर्तियां भी चीन में तैयार हो रही हैं। भारत में जो विकास कार्य चल रहे हैं उसमें चीन की मशीने लगी हुई हैं। चीन अपनी जीडीपी का 2।4फीसदी शोध और विकास कार्यों पर खर्च करता है। जबकि भारत मात्र 0.7फीसदी खर्च करता है। चीन में 550 बिलियन डॉलर प्रति वर्ष शोध पर खर्च कर रहा है। भारत में यह आंकड़ा मात्र 2 बिलियन डॉलर का है। इतना ही नहीं, दुनिया की टॉप 100 यूनिवर्सिटीज़ में चीन का 13 वां स्थान है। जबकि भारत का कोई भी विश्वविद्यालय इस 100 की सूची में शामिल नहीं है। भारत ने अपनी शिक्षा और स्वास्थ्य का बजट घटा दिया है। तकनीक के क्षेत्र में चीन का प्रभुत्व सारी दुनिया के देश मान रहे है। बहुमूल्य माईनिंग उत्पाद के उपकरण, ईवी बैटरी, सेमीकंडक्टर चिप्स, और सोलर एनर्जी जैसे क्षेत्रों में चीन का दबदबा सारी दुनिया में बना हुआ है। वहीं, भारत की इन क्षेत्रों में कोई उपलब्धि नहीं है। भारत का खनिज कच्चा माल चीन जाता हैं और वहां से उत्पाद बनकर भारत में आता है। भारत आयात के ऊपर निर्भर है। भारत के पास विकास शोध और शिक्षा को लेकर कोई ठोस योजना नहीं है। चीन के उत्पाद वैश्विक बाजारों पर इस कदर छाए हुए हैं। सारी दुनिया के देशों में चीन के उत्पाद का कोई विकल्प नहीं है। चीन दुनिया के देशों के लिए कम कीमत में विविध उत्पाद उपलब्ध कराने वाला सबसे बड़ा बाजार बन गया है। जबकि भारत के मेड इन इंडिया उत्पाद, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कम ही दिखते हैं। भारत का आयात, निर्यात की तुलना में ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। भारत की अर्थव्यवस्था में आयात-निर्यात व्यापार में भारत काफी घाटे में है। भारत में शिक्षा और शोध को लेकर सरकार और समाज दोनों की प्राथमिकताएं चिंताजनक हैं। पिछले 10 वर्षों से शिक्षा और शोध का बजट केंद्र सरकार घटाती चली जा रही है। भारत के छात्र विदेशों में पढ़ने के लिए जा रहे हैं। शिक्षा और शोध के मामले में भारत शून्य पर पहुंच गया है। जिसके कारण चीन की तुलना में भारत बहुत पीछे हो गया है। वैसे जहां तक विश्व गुरु की बात हे तो भारत अपने दर्शन को लेकर शुरु से ही दुनिया के देशों का नेतृत्व करता रहा है। अब जरुर भारत मंदिर-मस्जिद और धार्मिक बहसों में पिछले तीन दशक से उलझा हुआ है। पिछले 10 वर्षों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक शिक्षा और शोध को बढ़ावा देने से भारत बहुत दूर हो गया है। चीन का मीडिया तकनीक और इनोवेशन पर चर्चा करता है। वहीं भारतीय मीडिया धार्मिक मुद्दों में उलझा रहता है। भारतीय मेन स्ट्रीम का मीडिया सरकार का भोंपू बनकर रह गया है। भारतीय मीडिया को अब सुपारी मीडिया या गोदी मीडिया के नाम से भी भारत और दुनिया के देशों में जाना जाता है। भारत को सच में विश्व गुरु बनना है, तो शिक्षा, शोध, और तकनीकी विकास में भारी निवेश करना होगा। नई पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रौद्योगिकी में दक्षता प्रदान करने वाले संस्थान खोलने होंगे। जो संस्थान है उनकी गुणवत्ता पर ध्यान रखना होगा। इसके लिए केवल बजट का आवंटन नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और समय के अनुसार बदलाव और व्यावसायिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। भारत को डिमांड और सप्लाई की नीति पर काम करना होगा। यही बाजारबाद का सिद्धांत है। कम्युनिस्ट देश चीन ने इसको समझा है। अपनी आबादी का सही उपयोग उसने समय रहते हुए किया। कम कीमत में सारी दुनिया की जरूरत के समान को उपलब्ध कराने का काम किया। चीन का मीडिया और राजनीति में धर्म का कोई लेना-देना नहीं है। धर्म निजी आस्था और विश्वास का प्रतीक है। चीन ने शिक्षा, शोध, और तकनीकी प्रगति को प्राथमिकता दी है। तभी चीन एक महाशक्ति के रूप में दुनिया के देशों के सामने खड़ा है। वह आर्थिक एवं सामरिक मजबूती के साथ दुनिया को चुनौती दे रहा है। भारत को भी यही सब करना होगा। दुनिया के देशों में भारत सबसे बड़ा युवा आबादी वाला देश है। भारत को इस तरह की नीतियां बनानी होंगी, जिससे युवा आबादी को रोजगार के अवसर मिलें। भारत की आबादी शिक्षित होगी शिक्षा कॉलेज और स्कूल की डिग्री से नहीं मिलती है। अक्षर ज्ञान, भाषाई ज्ञान और डिजिटल तकनीकी का ज्ञान अलग है और व्यक्ति जो काम कर रहा होता है उसमें वह निरंतर विशेषज्ञता हासिल करता है। भारत यदि इस पर ध्यान देगा तो निश्चित रूप से भारत अपने ज्ञान और श्रम शक्ति के बल पर एक बार फिर विश्व गुरु बनने लायक होगा। सोचने और बोलने से विश्व गुरु नहीं बनेंगे। विश्व गुरु बनने के लिए सारी दुनिया के देशों से आर्थिक, सामाजिक और सामरिक दृष्टि से आगे रहना होगा, तभी हम विश्व गुरु का दर्जा हासिल कर पाएंगे।

चिंतन-मनन

ईमानदारी सर्वोत्तम

एक राजा ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए राज्य के सभी नौजवानों को एक-एक बीज दिया और कहा, इसे गमले में लगाकर सींचना और एक वर्ष के पश्चात मेरे पास लेकर आना। जिसका पौधा सबसे अच्छा होगा, उसे राजा घोषित किया जाएगा। सब बीज लेकर खुशी-खुशी लौटे। पांच-छह दिन गुजर जाने पर भी जब बीज अंकुरित नहीं हुआ, तो सबने उसी प्रकार का बीज नर्सरी से खरीदकर अपने-अपने गमले में लगा दिया और सींचने लगे। इन सबमें केवल भोलू नाम का नौजवान ही ?सा था, जिसने दूसरा बीज खरीदने का दुस्साहस नहीं किया। कुछ दिनों के पश्चात सभी युवा अपने-अपने हरे-भरे गमले के साथ राजा के सम्मुख पेश हुए, केवल भोलू ही खाली गमले के साथ कोने में नजरें चुराए खड़ा था। राजा ने उसे पास बुलाया और घोषणा कर दी कि भोलू ही मेरा उत्तराधिकारी है। जब जनता ने उसके खाली गमले को प्रश्नवाचक नजरों से देखा, तो राजा ने सभी के समक्ष यह भेद खोला कि मैंने उबले हुए बीज सभी को दिए थे। भोलू ने उसी उबले बीज को सींचा, जबकि शेष सभी ने राजा बनने के लिए बीज बदल लिए। ये बड़े-बड़े पौधे बेईमानी की कहानी कह रहे हैं। सत्य तो यही है कि बीज तो अंकुरित होना ही नहीं था, बावजूद इसके भोलू हिम्मत व ईमानदारी से अपना खाली गमला ही मेरे पास लेकर आया। इसलिए अगला राजा भोलू ही होगा। यदि हम बुद्धि रूपी जमीन पर ईमानदारी का बीजारोपण कर उसे सींचेंगे, तो निसंदेह उस पर विश्वास रूपी मीठे फल निकलेंगे।

तानसेन समारोह ने पूरा किया शतक

यशवंत गोरे

मध्य प्रदेश में कला के क्षेत्र के तीन प्रमुख समारोह आयोजित होते हैं। नृत्य कला का समारोह खजुराहो नृत्य समारोह खजुराहो में जो 1975 में प्रारम्भ हुआ, नाट्य कला का समारोह कालिदास समारोह उज्जैन में जो 1958 में पहली बार हुआ था और शास्त्रीय संगीत का तानसेन समारोह ग्वालियर में मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक विभाग द्वारा प्रमुखता से आयोजित किए जाते हैं। ग्वालियर के तानसेन समारोह को 100 वर्ष पूर्ण हो गए। संगीत सम्राट तानसेन जिनके लिए संगीत परब्रह्म से एक होने की अनवरत साधना थी उनकी स्मृतियों और शास्त्रीय संगीत को समर्पित यह प्रतिष्ठित समारोह इस वर्ष अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। इस प्रकार इस समारोह ने अपना शतक पूरा कर लिया। जो प्रदेश और संगीत प्रेमियों के लिए गौरव का विषय है। यह भारतीय शास्त्रीय संगीत की मजबूत जड़ों और सस्कृति के प्रति गहरी आस्था का प्रतीक है।

इस वर्ष यह समारोह 14 दिसंबर से 19 दिसंबर तक ग्वालियर में मनाया गया। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए जिला प्रशासन, नगर निगम ग्वालियर एवं मध्यप्रदेश पर्यटन के सहयोग से उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल के संयुक्त प्रयासों का यह एक प्रतिष्ठित आयोजन है। संस्कृति विभाग के सौजन्य से मुझे इस वर्ष दिनांक 16 दिसंबर को एक कला समीक्षक के रूप में इस समारोह का साक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस वर्ष इस समारोह में 100 से अधिक कलाकारों और कई संगीत के लिए समर्पित संस्थाओं को अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित किया गया था। तानसेन समारोह का यह शताब्दी वर्ष होने पर यूनेस्को द्वारा ग्वालियर नगर को संगीत नगरी घोषित किया गया, सभी ग्वालियर वासी निश्चित ही बधाई के पात्र है। इस उपलक्ष में मध्य प्रदेश के 1500 कलाकारों ने एक साथ एक ही स्वर में एक साथ तबला वादन किया, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल किया गया। ग्वालियर के ऐतिहासिक किले पर मध्यकाल के वाद्य यंत्रों को 350 कलाकारों ने वृहद शास्त्रीय बैंड की प्रस्तुति भी दी। शास्त्रीय और लोक संगीत में उपयोग आने वाले वाद्य यंत्रों की एक विशाल प्रदर्शनी इस समारोह की आकर्षण का केंद्र रही। इस प्रदर्शनी में लगभग 600 वाद्य यंत्रों को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें कई दुर्लभ वाद्य यंत्र भी शामिल है। तांबे का जल तरंग, नागपिन्नी, नरसिंघा (उत्तराखंड) जाइला फोन, पावसी के माटे, थप्पू, बानामोंडम (यह वाद्य यंत्र साजा वृक्ष की लकड़ी से बनाया जाता है और यह जनजातीय समुदाय द्वारा पारम्परिक संगीत में उपयोग किया जाता है) जैसे कई दुर्लभ वाद्य प्रदर्शित किए गए हैं। इस प्रदर्शनी का संयोजन उज्जैन के त्रिवेणी संग्रहालय द्वारा किया गया है। 99 वर्ष की तानसेन समारोह की यात्रा का सांकेतिक आस्वादन एवं कार्यक्रम के दुर्लभ चित्रों की प्रदर्शनी के साथ तानसेन सम्मान से अलंकृत विभूतियों के फोटो प्रदर्शनी में सम्मिलित किए गए हैं।

शताब्दी वर्ष होने के कारण इस वर्ष विशेष रूप से राग-रागिनियों के अंतर संबंध और उनकी रूपवत अभिव्यक्ति केंद्रित चित्रकला शिविर 13 दिसंबर से 19 दिसंबर तक आयोजित किया गया है। इस वर्ष देश भर से नामचीन कलाकारों,

(एक आँखों देखी रिपोर्ट)

चित्रकारों को आमंत्रित किया गया है मध्य प्रदेश के वरिष्ठ चित्रकार श्री लक्ष्मी नारायण भावसार के अलावा आनंद गुजरात के कन्नू पटेल, जान डगलस, पवन कुमावत, अवधेश मिश्रा, वेद प्रकाश पालीवाल, महेश चंद्र शर्मा, रामचंद्र खारतमल, मानस जेना और उत्तम दीक्षित चित्रकारों द्वारा नवोदित कलाकारों को इस शिविर में मार्गदर्शन दिया गया। इस शिविर में बनाई पेंटिंग्स की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। श्री लक्ष्मी नारायण भावसार ने बताया कि हमने पेंटिंग में एक नया प्रयोग शुरू किया है। उन्होंने बताया कि अभी तक आप संगीत केवल कान से सुन सकते थे पर अब आप आंखों से भी संगीत महसूस कर सकते हैं। हमने पेंटिंग के माध्यम से राग- रागिनी के प्रहसनों को उनके विषय वस्तु के भाव को पेंटिंग के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं, जिसमें यह आप जान सकेंगे कि यह कौन सा राग है। उन्होंने अपनी पेंटिंग रागों का राजा भैरव और भैरव के पुत्र बिलावल उसकी पत्नी राग -रागिनी और तोड़ी के वियोग को पेंटिंग के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयोग किया है।

वादी संवादी के अंतर्गत भारतीय संगीत में उपशास्त्रीय शैलियों की अवधारणा विषय पर पंडित सज्जनलाल ब्रम्हभट्ट, भोपाल शास्त्रीय संगीत में साथ संगति पंडित अरविंद आजाद, पुणे और शास्त्रीय गायन का पारंपरिक और वर्तमान स्वरूप विषय पर पंडित विकास कशालकर पुणे का कार्यक्रम भी रखा गया।

16 दिसंबर को आयोजित संस्कृति विभाग द्वारा रखी गई प्रेस वार्ता में स्थानीय पत्रकारों ने कई महत्वपूर्ण सुझाव विभाग के अधिकारीयों के समक्ष रखे। समारोह को नगर के संगीत प्रेमियों को जोड़ने और सफल बनाने हेतु लोकगीत और संगीत को शामिल करना एक प्रमुख सुझाव था। यह सुझाव भी दिया गया कि तानसेन को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल कर पढ़ाया जाना चाहिए। जिससे नई पीढ़ी के बच्चे तानसेन के बारे में जान सकें। यह बात भी सामने लाई गई की तानसेन के बारे में कोई अधिकृत जानकारी उपलब्ध नहीं है, उनके बारे में अनेक किवदंतियां है। उनके धर्म के बारे में भी भ्रांतियां हैं। लोग तानसेन को गूगल से सर्च करते हैं जो की अधिकृत नहीं है। संस्कृति विभाग को चाहिए कि तानसेन पर एक शोध कार्य किया जाना चाहिए और विस्तृत जानकारी का एक अधिकृत दस्तावेज तैयार कर संगीत प्रेमियों के सामने रखना चाहिए। उनके जन्म स्थान बेहट को एक स्मारक के रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए जो कि आज एक उपेक्षित स्थान है।चन्दन दास (गजल गायक) विदुषी शुभा मुद्गल(गायन), पंडित नागराज राव हवलदार(गायन), पंडित रोनू मजूमदार (बांसुरी वादक), कमला शंकर (गिटार), पंडित प्रेम कुमार मालिक (ध्रुपद गायन), यूजी नाकागावा (सारंगी) जापान, राहुल शर्मा (संतूर) और इसराइल से आये तावोर बेन दोर (सितार) एवं ताम्र क्लपर (तबला) तथा अन्य नामचीन कलाकारों की समारोह में प्रस्तुति इस समारोह की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है और लोकप्रिय भी ।संगीत सभाएं दो सत्रों सुबह और सायंकालीन को आयोजित की गई। संगीत की प्रस्तुतियों के लिए बनाए गए मंच की पृष्ठभूमि में महेश्वर के किले की प्रतिकृति बनाई गई, जो आकर्षक लग रही थी। इस किले का निर्माण 1700 ई. में होलकर स्टेट की महारानी देवी अहिल्या बाई होलकर ने करवाया था।

इस समारोह में तानसेन सम्मान वर्ष 2023 तबला वादक पण्डित स्वपन चौधरी, कोलकाता को एवं राजा मानसिंह तोमर सम्मान वर्ष 2023 सानंद न्यास, इंदौर को प्रदान किया गया।

ग्वालियर की कंपकंपा देने वाली ठंड में संगीत रसिको की भीड़ इस आयोजन की सफलता को प्रदर्शित करती है और यह भी दर्शाती है कि पाश्चात्य संगीत के प्रति आकर्षण के बावजूद शास्त्रीय संगीत के प्रति अभी भी लोगों के जुनून में कोई कमी नहीं है।

किसी भी आयोजन के लिए यह आवश्यक है कि श्रोताओं और प्रस्तुति करने वाले कलाकारों के बीच एक अच्छे उद्घोषक अथवा संचालन करने वाला हो जो समयबद्ध तरीके से प्रस्तुति की लिए कलाकारों को उनका परिचय कराते हुए आमंत्रित करे। इस समारोह में इस दायित्व को बखूबी से अनुभवी और मधुर आवाज के धनी उद्घोषक अशोक आनंद एवं मुकेश कुंदन थॉमस ने किया

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार एवं कला समीक्षक)
37, कुंजन नगर, फेस -2
नर्मदापुरम (होशंगाबाद रोड) भोपाल

समर्थ लोग निर्बल लोगों को स्नेह-सहयोग दें

ललित गर्ग

संयुक्त राष्ट्र ने 22 दिसंबर 2005 को यह दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को विश्व एकजुटता कोष और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा बढ़ावा दिया जाता है, जो दुनियाभर में गरीबी उन्मूलन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित हैं। इस दिवस को मनाते हुए हर व्यक्ति शिक्षा में योगदान देकर, गरीबों या शारीरिक या मानसिक रूप से अक्षम लोगों की मदद करके अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

लोगों के बीच एकजुटता के महत्व को बताने, गरीबी पर अंकुश लगाने, दुनिया भर में गरीबी उन्मूलन के लिए नए रास्तों की तलाश करने, विकासशील देशों में मानव और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने, शांति एवं सौहार्दपूर्ण जीवन को संभव बनाने, सरकारों को अंतरराष्ट्रीय समझौतों पर अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करने की याद दिलाने एवं पूरी दुनिया में, विशेष रूप से विकासशील देशों में सहयोग, शांति, सह-जीवन, समानता और सामाजिक न्याय की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिये अंतरराष्ट्रीय मानव एकता दिवस हर साल 20 दिसंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र ने 22 दिसंबर 2005 को यह दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस दिवस को विश्व एकजुटता कोष और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा बढ़ावा दिया जाता है, जो दुनियाभर में गरीबी उन्मूलन के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित हैं। इस दिवस को मनाते हुए हर व्यक्ति शिक्षा में योगदान देकर, गरीबों या शारीरिक या मानसिक रूप से अक्षम लोगों की मदद करके अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस दिवस के माध्यम से सरकारों को सतत विकास लक्ष्य के गरीबी और अन्य सामाजिक बाधाओं का जवाब देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। विविधता में एकता दर्शाने, सतत विकास के लिए लोगों, सरकारों को प्रेरित करने, लोगों को गरीबी, भुखमरी, बीमारियों से बाहर निकालने के लिए इस दिवस का विशेष महत्व है। इसमें भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इस जिम्मेदारी को संभालने का अर्थ है भारत को सशक्त करने के साथ-साथ दुनिया को मानव एकता की दृष्टि से एक नया चिन्तन, नया आर्थिक धरातल, शांति एवं सह-जीवन की संभावनाओं को बल देना। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र के निर्माण ने विश्व के लोगों और राष्ट्रों को एक साथ शांति, मानवाधिकारों और सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आकर्षित किया। संगठन की स्थापना अपने सदस्यों के बीच एकता और सद्भाव के मूल आधार पर की गई थी, जो सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा में व्यक्त की गई थी, जो अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए अपने सदस्यों की एकजुटता पर निर्भर करती है। अंतरराष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस सतत विकास एवं समतामूलक विकास के एजेंडा पर आधारित है, जो अपने आप में गरीबी, भूख और बीमारी जैसे कई दुर्बल पहलुओं से लोगों को बाहर निकालने के लिए केंद्रित है। 'मिलेनियम डिक्लेरेशन' को ध्यान में रखते हुए, एकजुटता को 21वीं सदी में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मूलभूत मूल्यों में से एक माना जाता है, जिसके तहत कम से कम लाभ उठाने वाले और सबसे अधिक मुश्किलों का सामना करने वाले लोग उन लोगों की मदद के योग्य होते हैं जिन्हें सबसे अधिक लाभ मिलता है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा भी है कि एक व्यक्ति तब तक जीना शुरू नहीं करता जब तक वह अपनी व्यक्तिगत चिंताओं के संकीर्ण दायरे से ऊपर उठकर समस्त मानवता की व्यापक चिंताओं तक नहीं पहुंच जाता।

आज समूची दुनिया में मानवीय एकता एवं चेतना के साथ खिलवाड़ करने वाली त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियां सर्वत्र परिव्याप्त हैं-जिनमें आतंकवाद सबसे प्रमुख है। जातिवाद, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता, महंगाई, गरीबी, भिखमंगी, विलासिता, अमीरी, अनुशासनहीनता, पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा, उत्पीड़न और चरित्रहीनता आदि अनेक परिस्थितियों से मानवता पीड़ित एवं प्रभावित है। उक्त समस्याएं किसी युग में अलग-अलग समय में प्रभावशाली रहीं होंगी, इस युग में इनका आक्रमण समग्रता से हो रहा है। आक्रमण जब समग्रता से होता है तो उसका समाधान भी समग्रता से ही खोजना पड़ता है। हिंसक परिस्थितियां जिस समय प्रबल हों, अहिंसा का मूल्य स्वयं बढ़ जाता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि आपको मानवता में विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है। यदि महासागर की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है।' ऐसे ही विश्वास को जागृत करने के लिये ही विश्व मानव एकता दिवस की आयोजना की गई है। गरीबी का कारण हिंसा, आतंक, अप्रामाणिकता, संग्रह, स्वार्थ, शोषण और क्रूरता आदि हैं, इनके दंश मानवता को मूर्च्छित कर रहे हैं एवं मानव एकता की सबसे बड़ी बाधाएं हैं। इस मूर्च्छा को तोड़ने के लिए अहिंसा, सह-जीवन, सौहार्द, शांति और सह-अस्तित्व का मूल्य बढ़ाना होगा तथा सहयोग एवं संवेदना की पृष्ठभूमि पर स्वस्थ समाज-संरचना की परिकल्पना को आकार देना होगा। दूसरों के अस्तित्व के प्रति संवेदनशीलता मानव एकता का आधार तत्व है। जब तक व्यक्ति अपने अस्तित्व की तरह दूसरे के अस्तित्व को अपनी सहमति नहीं देगा, तब तक वह उसके प्रति संवेदनशील नहीं बन पाएगा।

मुंबई में हादसा का जिम्मेदारी किसकी

संजय गोस्वामी

मुंबई के गेटवे ऑफ इंडिया से एलिफेंटा जा रही बोट हादसे का शिकार हो गई जो एक दूसरे से टकरा गई और नाव में 80 यात्री सवार थे. घटना 18 दिसंबर को 3 बजकर 55 मिनट पर हुई. हादसे के बाद 13लोगों की मौत हो गई और तीन लोग अभी लापता हैं और 101 लोग अस्पताल में भर्ती है ऐ प्रशासन की लापरवाही है ना तो क़ोई लाइफ जैकट पहनता था पहने भी तो कैसे दिया जाता ही नहीं जिसकी जाँच करनी चाहिए आखिर लाइफ जैकट इतने गहरे समुद्र में क्यों नहीं अनिवार्य किया जाता है जबकी तालाबों में लाइफ जैकट मिलता है यदि तालाब में नहीं भी मिले तो जान बचाया जा सकता है लेकिन इतना गहरा समुद्र में डूब कर कहाँ जायेगा ऐ बताना मुश्किल है कोस्ट गार्ड के जवान तो ऊपर चक्कर मारते हैं लेकिन डूबने में जब तक बचाने आएंगे तब तक देर हो जाती है जो यात्री सवार थे क्या लाइफ जैकेट पहने थे नहीं तो ऐ प्रशासन की लापरवाही है लाइफ़जैकेट, जिसे पर्सनल फ्लोटेशन डिवाइस (क्र्नष्ठ) या बाउंसी वेस्ट के नाम से भी जाना जाता है, उपयोगकर्ता को पानी में तैरता हुआ रखेगा, जिससे उसके बचने की संभावना बहुत बढ़ जाती है। जैसा कि नाम से पता चलता है, यह आपातकालीन स्थिति में आपकी जान बचा सकता है, जिससे आपको बचाए जाने के लिए अधिक समय मिल सकता है अत: मैं भी एक बार गया था देखा छोटी बोट भी चलती है और क़ोई लाइफ जैकेट भी नहीं था जान से इस तरह खेलवाड़ करना लापरवाही है कुल मिलाकर, महासागर काफी गहरा है; हालाँकि, इसका तल समतल या एक समान नहीं है, जिसका अर्थ है कि महासागर में पानी की गहराई भी अलग-अलग होती है। महासागर में सबसे गहरी जगह 10,935 मीटर (35,876 फीट) है और यह प्रशांत महासागर के मारियाना ट्रेंच में चैलेंजर डीप नामक स्थान पर पाई जाती है। चूँकि महासागर एक बड़ा स्थान है और इसका अध्ययन करना कठिन है, इसलिए यदि आप कहीं कहीं महासागर की गहराई का पता लगाना मुश्किल हैं, तो आपको कई तरह के परिणाम मिल सकते हैं। 3,682 मीटर (12,080 फीट) की औसत महासागर गहराई का सबसे हालिया अनुमान 2010 में NOAA और वुड्स होल ओशनोग्राफ़िक इंस्टीट्यूशन के वैज्ञानिकों द्वारा उपग्रह माप का उपयोग करके गणना की गई थी। इन मापों से पता चला कि समुद्र तल पहले से ज्ञात की तुलना में बहुत अधिक ऊबड़-खाबड़ और पहाड़ी है और इसके परिणामस्वरूप औसत महासागर की गहराई पहले की गणना की गई गहराई से कम है। जबकि उपग्रह मापों ने समुद्र की गहराई के बारे में पहले से बेहतर अनुमान दिया है, समुद्र तल को मापने के बजाय, उपग्रह वास्तव में समुद्र की सतह को देखते हैं और समुद्र तल पर पहाड़ जैसी विशेषताओं पर परिवर्तनों का पता लगाते हैं। इसलिए वैज्ञानिकों को समुद्र तल की जो तस्वीर मिलती है वह बिल्कुल सही नहीं होती और उसका रिज़ॉल्यूशन भी बहुत अच्छा नहीं होता। कुल मिलाकर, महासागर काफी गहरा है; हालाँकि, इसका तल समतल या एक समान नहीं है, जिसका अर्थ है कि महासागर में पानी की गहराई भी अलग-अलग होती है। महासागर में सबसे गहरी जगह 10,935 मीटर (35,876 फीट) है और यह प्रशांत महासागर के मारियाना ट्रेंच में चैलेंजर डीप नामक स्थान पर पाई जाती है। चूँकि महासागर एक बड़ा स्थान है और इसका अध्ययन करना कठिन है, इसलिए यदि आप कहीं कहीं महासागर की गहराई का पता लगाना मुश्किल हैं, तो आपको कई तरह के परिणाम मिल सकते हैं। 3,682 मीटर (12,080 फीट) की औसत महासागर गहराई का सबसे हालिया अनुमान 2010 में NOAA और वुड्स होल ओशनोग्राफ़िक इंस्टीट्यूशन के वैज्ञानिकों द्वारा उपग्रह माप का उपयोग करके गणना की गई थी।

खास बात

सावरकर के लिए उद्धव ठाकरे ने की भारत रत्न की मांग

भाजपा के वीर सावरकर और महाराष्ट्र के विनायक राव दामोदर को लेकर एक नई राजनीति शुरू हो गई है। उद्धव ठाकरे ने पत्रकार वार्ता कर सरकार से विनायक दामोदर सावरकर को भारत रत्न देने की मांग की है। दामोदर राव सावरकर ऐसी दुधारू तलवार है। जो इस समय सत्ता पक्ष और विपक्ष के लिए क्या नुकसान और फायदा कर सकती है। यह देश की राजनीति में बड़ा चर्चित हो रहा है। बहरहाल उद्धव ठाकरे ने सरकार से भारत रत्न की मांग करके, एनडीए गठबंधन में फूट डालने की एक नई चाल चल दी है। 1980 में जनता पार्टी की सरकार भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुद्दे पर गिरी थी। वही स्थिति अब बनती हुई दिख रही है।

2025 में राहु-केतु-शनि और बृहस्पति मचाएंगे धमाल

चार ग्रह एक साथ राशि बदलने जा रहे हैं ।ज्योतिषियों ने यह कहकर भारतीय राजनेताओं की चिंता को बढ़ा दिया है ।शनि ग्रह कर्म फल का न्यायाधीश होता है ।जो समय आने पर न्याय करता है ।न्यायालय की भूमिका निष्पक्ष होगी ।यह ज्योतिषाचार्य का कहना है ।इसी तरह से बृहस्पति गुरु हैं ।उनकी भी राशि बदलने के साथ ही अति महत्वपूर्ण भूमिका होने जा रही है ।साथ में राहु-केतु भी हैं ।यह क्या धमाल मचाएंगे,कहना मुश्किल है ।राजनेताओं और न्यायाधीशों की चिंता बढ़ गई है ।ग्रहों का प्रभाव इन दोनों के ऊपर सबसे ज्यादा पडना है ।इसके आसार दिखने लगे हैं ।न्यायाधीशों और राजनेताओं की चिंता बढ़ गई है ।

बांग्लादेश में हिंदुओं के समर्थन में उतरी प्रियंका गांधी

वाइनाड से कांग्रेस की सांसद चुनी गई प्रियंका गांधी इन दिनों काफी चर्चाओं में बनी हुई हैं। मंगलवार को वह संसद में एक बैग लेकर पहुंची। जिसमें बांग्लादेश में हिंदुओं और ईसाइयों के ऊपर हो रहे अत्याचार पर विरोध दर्ज कराया। सोमवार को वह फिलिस्तीन के समर्थन में बैग लेकर पहुंची थी। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बांग्लादेश में हिंदुओं के ऊपर अत्याचार को नहीं रोक अपने पर प्रियंका गांधी ने यह निशाना साधा है। प्रियंका गांधी ने बांग्लादेश की हिंदुओं की मांग उठाकर, सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आइना दिखा दिया है। भाजपा हतप्रभ है,अब इसका जवाब किस रूप में दें। संसद में अब लोगों को प्रियंका को देखकर इंदिरा गांधी की याद आने लगती है। जब से वह आई है, लगातार चर्चा का विषय बनी हुई हैं।

किसानों ने किया सुप्रीम कोर्ट का बहिष्कार ?

पंजाब और हरियाणा की सीमा पर पिछले 10 महीने से किसान धरना दे रहे हैं ।किसानों ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त कमेटी से मिलने से इनकार कर दिया है । 18 दिसंबर को यह मीटिंग होनी थी ।किसानों ने कह दिया, वह बैठक में भाग नहीं लेंगे ।सुप्रीम कोर्ट हमेशा सरकार के पक्ष में निर्णय करती है ।किसान 10 महीने से हरियाणा पंजाब बॉर्डर पर बैठे हैं ।सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर वह पैदल दिल्ली जाना चाहते थे ।उन्हें दिल्ली नहीं जाने दिया गया ।हरियाणा सरकार ने शंभू बॉर्डर नहीं खोली ।सुप्रीम कोर्ट ने किसानो की याचिका सुनने से भी इंकार कर दिया । जिसके कारण किसानों को सुप्रीम कोर्ट की कमेटी पर भी विश्वास नहीं रहा ।वहीं किसान नेता डल्लेवाल 23 दिनों से आमरण अनशन पर बैठे हुए हैं ।उनकी हालत बहुत खराब है ।किसान अब सुप्रीम कोर्ट पर विश्वास नहीं कर रहे हैं ।यह चिंता की बात है ।

राशिफल

शुभ संवत 2081, शाके 1946, सौम्य गोष्ठ, पौष कृष्ण पक्ष, हेमंत ऋतु, गुरु उदय पूर्वे शुक्रोदय पश्चिम तिथि पंचमी शुक्रवासरे 12/43 मघा नक्षत्रे 56/55 रात्रि आ. 5/29 विवयोगे 34/26 तैतिल करणे 14/17 सिंह की चंद्रमा, मूल समाप्त रात्रि आ.5/29 रवियोग 56/55 धान्य छेदन मुहूर्त तथापि पूर्व दिशा की यात्रा शुभ उत्तम होगी।

आज जन्म लिए बालक का फल: आज जन्म लिया बालक योग्य व्यापारी, कुशल शासक, प्रशासक, जिद्दी, हठी, मिलट्री मेन, सिपाही, कर्नल, बिग्रेडियर, कमान्डर तथा लेखापाल, इंजीनियर, डॉक्टर तथा कुशलवक्ता, अधिवक्ता, शासक प्रशासक तथा ठेकेदार भूमि भवन का स्वामी, धनी पंच, सरपंच तथा जनपद का अधिकारी होगा।

मेष राशि- यात्रा भय कष्ट, व्यावसाय बाधा, लाभ, पारिवारिक समस्या उलझन भरी रहेगी।

वृष राशि- राजभय रोग, स्वजन सुख, शिक्षा व लेखन कार्य में सफलता व प्रगति होवेगी।

मिथुन राशि- वाहन भय, मातृ कष्ट, हानि तथा अशांति का वातावरण रहेगा, लाभ के अवसर बनेंगे।

कर्क राशि- सफलता, उन्नति, शुभ कार्य, विवाद, राज कार्य मामलें मुकदमें में प्रगति, जीत होगी।

सिंह राशि- शरीर कष्ट, कार्य व्यय, कार्य में सफलता, आर्थिक सुधार होगे, रुके कार्य बन जाएगे।

कन्या राशि- खर्च, विवाद, स्त्री कष्ट, विद्या लाभ और धीरे-धीरे सुधार होगा, अवरोध में सुधार होगा।

तुला राशि- यात्रा से हर्ष, राज लाभ, शरीर कष्ट, खर्च की मात्रा बढ़ेगी, आर्थिक कष्ट बढ़ जाएंगे।

वृश्चिक राशि- कार्यवृत्ति से लाभ, यात्रा संपत्ति, लाभ, व्यापारी गति में सुधार अवश्य होगा।

धनु राशि- अल्प लाभ चोट और अग्नि शरीर भय, मानसिक परेशानी अवश्य ही बनेगी।

मकर राशि- शत्रु से हानि, कार्य व्यय, शारीरिक सुख होवे, कभी-कभी कुछ कष्ट अवश्य होवे।

कुंभ राशि- सुख व्यय, संतान सुखकार्य, सफलता उत्साह की वृद्धि होगी, ध्यान रखें।

मीन राशि- पदोन्नति, राजभय, न्याय, लाभ हानि, अधिकारियों से मन मुटाव अवश्य बनेगा।

पीएल गौतमाचार्य

दैनिक पंचांग

20 दिसम्बर 2024 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	धनु में	धनु	06.17 बजे से
चंद्र	सिंह में	मकर	08.26 बजे से
मंगल	कर्क में	कुंभ	10.13 बजे से
बुध	वृश्चिक में	मीन	11.45 बजे से
गुरु	वृष में	मेष	13.16 बजे से
शुक्र	मकर में	वृष	14.56 बजे से
शनि	कुंभ में	मिथुन	16.54 बजे से
राहु	मीन में	कर्क	19.07 बजे से
केतु	कन्या में	सिंह	21.24 बजे से
		कन्या	23.36 बजे से
राहुकाल	10.30 से 12.00 बजे तक	तुला	01.46 बजे से
		वृश्चिक	04.01 ब.से

शुक्रवार 2024 वर्ष का 355 वां दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** हेमन्त।
विक्रम संवत् 2081 **शक संवत्** 1946
मास पौष (दक्षिण भारत में मृगशीर्ष) **पक्ष** कृष्ण
तिथि पंचमी 10.49 बजे को समाप्त।
नक्षत्र मघा 03.47 बजे रात्र को समाप्त।
योग विष्कुम्भ 18.11 बजे को समाप्त।
करण तैतिल 10.49 बजे तदनन्तर गर 23.30 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 18.7 घण्टे
रवि क्रान्ति दक्षिण 23° 26'
सूर्य दक्षिणायन
कलि अहर्गण 1872199
जूलियन दिन 2460664.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना जमादि उस्सानी
तारीख 17

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
चर	05.55 से	07.23 बजे तक	रोग	05.38 से	07.1 बजे तक
लाभ	07.23 से	08.51 बजे तक	काल	07.11 से	08.43 बजे तक
अमृत	08.51 से	10.19 बजे तक	लाभ	08.43 से	10.15 बजे तक
काल	10.19 से	11.47 बजे तक	उद्वेग	10.15 से	11.47 बजे तक
शुभ	11.47 से	01.15 बजे तक	शुभ	11.47 से	01.19 बजे तक
रोग	01.15 से	02.43 बजे तक	अमृत	01.19 से	02.51 बजे तक
उद्वेग	02.43 से	04.10 बजे तक	चर	02.51 से	04.23 बजे तक
चर	04.10 से	05.38 बजे तक	रोग	04.23 से	05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

भारत के इस राज्य में है प्राचीन समय का अमूल्य खजाना

सनातन धर्म को प्रदर्शित करती मंदिर और मूर्तियां आकर्षण का केंद्र

छत्तीसगढ़ में पुरातात्विक महत्व के कई ऐतिहासिक और प्रसिद्ध स्थल हैं. उनमें से एक है सरगुजा का महेशपुर गांव, दुनिया की सबसे पुरानी थियेटर और शिलालेखों के लिए फेमस रामगढ़ के पास रेण नदी का तटीय क्षेत्र 8वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी के बीच कला और संस्कृति के अभूतपूर्व विकास का गवाह बना.

प्राचीन काल के टूटे-फूटे अवशेष सरगुजा जिले के महेशपुर और कलचा-देवगढ़ में फैले हुए हैं. शैव, वैष्णव और जैन धर्म से जुड़ी कलाकृतियों और प्राचीन टीलों की संख्या के लिहाज से महेशपुर आर्कियोलॉजिकल व्यू से बहुत महत्वपूर्ण है. छत्तीसगढ़ में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ कई पुरातात्विक स्थल हैं. राज्य का प्राकृतिक स्वरूप और यहां छिपे हुए पुरातात्विक रहस्य लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं. इस जगह पत्थरों को तराश कर बनाई गई मंदिर और हजारों ऐसी मूर्तियां है जो सनातन धर्म को प्रदर्शित करती है.

अब तक आर्कियोलॉजिस्ट और आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंट के द्वारा महेशपुर में चार टीलों की खुदाई की जा चुकी है. उन टीलों में कई मंदिरों और शिव-पार्वती की मूर्तियों के अवशेष मिले हैं. सरगुजा के उदयपुर क्षेत्र का रामगढ़, महेशपुर का इलाका भगवान राम के वन गमन और उनके वनवास के दिनों की यादों से जीवंत है. स्थानीय लोककथाओं के अनुसार जमदग्नि ऋषि की पत्नी रेणुका यहां रेण नदी के रूप में बहती हैं.

सरगुजा आने वाले सैलानियों के लिए ये स्थान आकर्षण का केंद्र हो सकता है, अंबिकापुर से रायपुर मार्ग से करीब 45 किलोमीटर की दूरी पर उदयपुर नाम का कस्बा है, इस कस्बे से ही महेशपुर जाने का मार्ग है. उदयपुर से करीब 12 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद आप महेशपुर पहुंच जायेंगे. पुरातत्व विभाग ने 2008-09 भी यहां खुदाई की थी, जिसमें अवशेषों का खजाना मिला था. इस स्थान पर पुरातत्व संग्रहालय भी बना है, लेकिन अवशेषों के संरक्षण की खास व्यवस्था नहीं है. साहित्यकार संतोष दास बताते है की उदयपुर से 12 किलोमीटर की दूरी पर महेशपुर नाम की जगह है, यहां 8 वीं से 13 वीं शताब्दी के पुरातात्विक अवशेष देखने को मिलते हैं, बहुत बड़ी संख्या में यहां पुरातात्विक अवशेष हैं, पर्यटकों के लिए ये काफी आकर्षक जगह है.

ग्रामीण बताते है की यहां अभी भी जमीन के नीचे हजारों की संख्या में अवशेष दबे हुए है, पुरातत्व विभाग को यहां फिर से खुदाई करानी चाहिये. सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए की ये धरोहर संरक्षित हो सके और सरगुजा में पर्यटन की संभावना बढ़ सके.

कुम्भलगढ़ किला, जिसे 'राजस्थान का ग्रेट वॉल' भी कहा जाता है, कुम्भलगढ़ पहाड़ी पर स्थित है। यह किला 15वीं शताब्दी में राणा कुम्भा द्वारा बनवाया गया था और यह किला मेवाड़ साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण किला था। राजस्थान का कुम्भलगढ़ किला भारतीय इतिहास और स्थापत्य कला का एक अद्वितीय उदाहरण है। यह किला राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित है और यह भारतीय किलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कुम्भलगढ़ किला अपनी विशाल दीवारों, भव्य वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के कारण प्रसिद्ध है। यह किला केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि राजस्थान की शाही धरोहर का प्रतीक भी है। कुम्भलगढ़ को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। आइए, जानते हैं कुम्भलगढ़ के प्रमुख आकर्षण और इसके महत्व के बारे में।

कुम्भलगढ़ पर्यटन स्थल : राजस्थान का ऐतिहासिक किला और धरोहर

1. कुम्भलगढ़ किला

कुम्भलगढ़ किला, जिसे 'राजस्थान का ग्रेट वॉल' भी कहा जाता है, कुम्भलगढ़ पहाड़ी पर स्थित है। यह किला 15वीं शताब्दी में राणा कुम्भा द्वारा बनवाया गया था और यह किला मेवाड़ साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण किला था। किले की दीवारें लगभग 36 किलोमीटर लंबी हैं, जो इसे दुनिया की दूसरी सबसे लंबी किलावाली दीवार बनाती हैं, केवल चीन की दीवार के बाद। कुम्भलगढ़ किले का किला परिसर बहुत विशाल है और इसमें कई महल, मंदिर और जलाशय हैं। किले की दीवारों पर चढ़कर आप कुम्भलगढ़ और आसपास के क्षेत्र का शानदार दृश्य देख सकते हैं।

2. बड़ी सीढ़ियाँ

कुम्भलगढ़ किले की विशाल दीवारों के आसपास बड़ी सीढ़ियाँ हैं, जिन पर चढ़ते हुए पर्यटक किले के विभिन्न हिस्सों को देख सकते हैं। इन सीढ़ियों से किले के भीतर के अन्य महलों और संरचनाओं का दृश्य अद्भुत होता है। किले की दीवारों पर बनी मजबूत संरचना यह दर्शाती है कि किले का निर्माण युद्ध की दृष्टि से बहुत ही मजबूत और प्रभावशाली था।

3. कुम्भलगढ़ किला के महल

कुम्भलगढ़ किले में कई महल स्थित हैं, जिनमें सबसे प्रमुख महल राणा कुम्भा महल है। इस महल का वास्तुशिल्प राजपूत शैली का अद्भुत उदाहरण है। इस महल में राजपूत शाही परिवार के लिए शानदार कक्ष, जलाशय और स्विमिंग पूल भी बनाए गए थे। महल के अंदर एक संग्रहालय भी है, जहाँ कुम्भलगढ़ किले के इतिहास और यहां रहने वाले शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

4. कुम्भलगढ़ के मंदिर

कुम्भलगढ़ किले के भीतर कई मंदिर स्थित हैं, जो किले की ऐतिहासिकता और धार्मिक महत्व को दर्शाते हैं। इनमें से कुछ प्रसिद्ध मंदिरों में लक्ष्मी नारायण मंदिर और सिद्धनाथ मंदिर हैं। इन मंदिरों में प्राचीन मूर्तियों और शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है। ये मंदिर दर्शाते हैं कि कुम्भलगढ़ सिर्फ एक किला ही नहीं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण स्थल था।

5. कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य

कुम्भलगढ़ किले के आसपास स्थित कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, एक शांतिपूर्ण और प्राकृतिक स्थल है। यहाँ की घने जंगलों में विभिन्न प्रकार के जीव-जंतु और पक्षी पाए जाते हैं। पर्यटक यहाँ जैव विविधता का आनंद ले सकते हैं और जंगली जीवन के करीब जा सकते हैं। अभयारण्य में ट्रैकिंग और अन्य साहसिक गतिविधियाँ भी उपलब्ध हैं।

6. कुम्भलगढ़ किले का सूर्यास्त

कुम्भलगढ़ किला सूर्यास्त के समय बेहद सुंदर नजर आता है। किले की दीवारों पर चढ़कर सूर्यास्त का दृश्य देखना एक अद्भुत अनुभव होता है। यह दृश्य न केवल मनोहक है, बल्कि यह पर्यटकों को शांति और सुकून का अनुभव भी कराता है।

7. कुम्भलगढ़ में फेस्टिवल्स और इवेंट्स

कुम्भलगढ़ किले में समय-समय पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, महोत्सव और प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं। यहाँ का कुम्भलगढ़ महोत्सव एक प्रमुख उत्सव है, जिसमें राजस्थान की पारंपरिक संगीत, नृत्य और शिल्पकला का प्रदर्शन किया जाता है। यह महोत्सव किले के ऐतिहासिक महत्व को फिर से जीवित करता है और पर्यटकों को एक शानदार सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है।

कैसे पहुंचे कुम्भलगढ़?

हवाई मार्ग : कुम्भलगढ़ का निकटतम एयरपोर्ट उदयपुर में स्थित है, जो कुम्भलगढ़ से लगभग 85 किलोमीटर दूर है। उदयपुर से टैक्सी या बस द्वारा कुम्भलगढ़ पहुंचा जा सकता है।

रेल मार्ग : कुम्भलगढ़ का निकटतम रेलवे स्टेशन नाथद्वारा रेलवे स्टेशन है, जो कुम्भलगढ़ से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित है। आप नाथद्वारा स्टेशन से कुम्भलगढ़ के लिए टैक्सी ले सकते हैं।

सड़क मार्ग : कुम्भलगढ़ सड़क मार्ग से भी अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। उदयपुर, राजसमंद और अन्य प्रमुख शहरों से कुम्भलगढ़ के लिए बसें और टैक्सियाँ उपलब्ध हैं।

सर्वोत्तम समय

कुम्भलगढ़ घूमने का सर्वोत्तम समय अक्टूबर से मार्च के बीच होता है, जब मौसम ठंडा और सुखद रहता है। गर्मियों में यहाँ का तापमान बहुत बढ़ सकता है, इसलिए इस मौसम में यात्रा करने से बचना चाहिए।सबसे अच्छे वेकेशन पैकेज कुम्भलगढ़ किला राजस्थान का एक अद्भुत पर्यटन स्थल है, जो ऐतिहासिकता, वास्तुकला, और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है। यहाँ का किला, मंदिर, वन्यजीव अभयारण्य और सूर्यास्त के दृश्य पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करते हैं। कुम्भलगढ़ ना सिर्फ एक ऐतिहासिक स्थल है, बल्कि यह शांति, सुंदरता और रोमांच का भी एक बेहतरीन मिश्रण है। अगर आप राजस्थान की समृद्ध धरोहर को जानने के इच्छुक हैं, तो कुम्भलगढ़ एक बेहतरीन यात्रा स्थल है।

कश्मीर को भी टक्कर देती हैं भारत की ये शानदार जगहें

कश्मीर अपनी खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में फेमस है। लेकिन कश्मीर के अलावा हमारे देश में कई ऐसी जगहें मौजूद हैं, जिनको मिनी कश्मीर कहा जाता है। ऐसे में आप भी इन जगहों पर पहुंचकर जन्नत का दीदार कर सकते हैं।

जम्मू-कश्मीर को जन्नत कहा जाता है। ऐसे में अधिकतर लोग जन्नत यानी की जम्मू-कश्मीर के दीदार के लिए जाते हैं। खूबसूरती के मामले में यह जगह किसी हसीन जन्नत से कम नहीं है। इसलिए इस जगह पर सिर्फ भारत से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी लोग मौज-मस्ती के लिए पहुंचते हैं।कश्मीर अपनी खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में फेमस है। लेकिन कश्मीर के अलावा हमारे देश में कई ऐसी जगहें मौजूद हैं, जिनको मिनी कश्मीर कहा जाता है।

ऐसे में आप भी इन जगहों पर पहुंचकर जन्नत का दीदार कर सकते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको भारत की ऐसी की कुछ अद्भुत और शानदार जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको मिनी कश्मीर के नाम से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश की हसीन वादियों में मौजूद तोष को भी कश्मीर नाम से जाना जाता है। हिमाचल के कुल्लु जिले में स्थित तोष में हर महीने हजारों की संख्या में पर्यटक घूमने के लिए आते हैं।

समुद्र तल से करीब 2 हजार मीटर से अधिक ऊंचाई पर मौजूद तोष गांव खूबसूरती के मामले में जम्मू-कश्मीर से कम नहीं है। बर्फबारी के दौरान यह जगह कश्मीर की तरह लगती है। बर्फबारी के दौरान यह गांव बर्फ की चादर से ढक जाता है।

औली

उत्तराखंड की हसीन वादियों में स्थिति औली एक ऐसी जगह है, जहां पर घूमने का सपना सभी का होता है। यहां पर बड़े-बड़े देवदार के पेड़, ऊंचे-ऊंचे पहाड़, झील-झरने और घास के मैदान औली की सुंदरता को बढ़ाने का काम करते हैं।

इस हिल स्टेशन की खूबसूरती और बर्फबारी इस कदर फेमस है कि इसको उत्तराखंड का कश्मीर भी कहा जाता है। इसको मिनी कश्मीर के नाम से जाना जाता है।औली में बर्फबारी के दौरान यहां पर काफी संख्या में पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। यहां के नजारे बिलकुल कश्मीर की तरह लगते हैं। यहां पर एडवेंचर एक्टिविटी करने का अपना ही मजा होता है।

मेचुका वैली

सिर्फ उत्तराखंड या हिमाचल प्रदेश में ही खूबसूरत जगहें नहीं हैं, बल्कि आपको देश के नॉर्थ ईस्ट इंडिया में भी मनमोहक जगहें देखने को मिलती हैं। देश के इस हिस्से में कई अद्भुत और शानदार जगहें हैं, जो जम्मू-कश्मीर को भी टक्कर देने का काम करती हैं।

बता दें कि अरुणाचल प्रदेश में स्थित मेचुका वैली एक ऐसी शानदार जगह है, जिसको नॉर्थ ईस्ट का कश्मीर माना जाता है। यहां पर घास के मैदान, मनमोहक पहाड़ और झील-झरने इस जगह की खूबसूरती को बढ़ाने का काम करते हैं। मेचुका वैली में जब बर्फ पड़ती है, तो पूरी वैली सफेद रंग में रंगी दिखती है। यहां के नजारे कश्मीर से कम नहीं होते हैं।

मुनस्यारी

समुद्र तल से करीब 2 हजार मीटर से भी अधिक ऊंचाई पर स्थित मुनस्यारी बेहद खूबसूरत और मनमोहक जगह है। यह जगह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में पड़ती है। यह उत्तराखंड के टॉप हिल स्टेशन्स में से एक है। यहां पर काफी संख्या में पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

मुनस्यारी अपनी खूबसूरती के लिए काफी फेमस है। इसको मिनी कश्मीर भी कहा जाता है। बर्फबारी के दौरान यह हिल स्टेशन बर्फ की चादर से ढक जाता है और यह इस दौरान यहां पर बर्फबारी का आनंद लेने के लिए काफी पर्यटक पहुंचते हैं। वहीं एडवेंचर प्रेमियों के लिए यह जगह किसी जन्नत से कम नहीं है। मुनस्यारी में स्नो ट्रैकिंग पूरे भारत में फेमस है।

पश्चिम बंगाल की खूबसूरती को बढ़ाती हैं ये समुद्र तटीय जगहें

पश्चिम बंगाल देश का एक ऐसा राज्य है, जो हिमालय पर्वत से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैला है। इसलिए यहां पर हर साल लाखों की संख्या में देसी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

पश्चिम बंगाल देश का एक प्रमुख और बेहद खूबसूरत राज्य है। यह भारत का चौथा और सबसे ज्यादा आबादी वाला राज्य है। क्षेत्रफल के हिसाब से यह देश का 13वां सबसे बड़ा राज्य माना जाता है। यह देश का एक ऐसा राज्य है, जो हिमालय पर्वत से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैला है। इसलिए यहां पर हर साल लाखों की संख्या में देसी और विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं। पश्चिम बंगाल में सैमसिंग, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग, संदक्फू और कलिम्पोंग जैसे हिल स्टेशन्स के बारे में तो हर कोई जानता है।

लेकिन पश्चिम बंगाल में मौजूद खूबसूरत समुद्र तटीय जगहों के बारे में बहुत कम लोगों को मालूम है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको पश्चिम बंगाल में स्थित समुद्र तटीय जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।जो राज्य की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करती है।ऐसे में आप भी इन जगहों पर घूमने के लिए पहुंच सकते हैं।

दीघा

अगर पश्चिम बंगाल में किसी शानदार और फेमस समुद्र तटीय जगहों पर घूमने की बात होती है, तो लोग सबसे पहले दीघा पहुंचते हैं। यह जगह कोलकाता से करीब 164 किमी दूर बंगाल के टॉप डेस्टिनेशन में शामिल है।

दीघा बीच को समुद्र की हसीन लहरों के लिए जाना जाता है। यहां पर हर दिन हजारों की संख्या में सैलानी पहुंचते हैं। इस बीच की खूबसूरती मुंबई या गोवा बीच से कम नहीं है। यहां पर विदेशी पर्यटक भी पहुंचते हैं। इस बीच पर आप सूर्योदय और सुर्यास्त के भी मनमोहक नजारे देख सकते हैं।

शंकरपुर

बंगाल की खाड़ी के पास स्थित शंकरपुर राज्य का छिपा हुआ खजाना माना जाता है। दीघा से करीब 15 किमी की दूरी पर यह खूबसूरत जगह स्थित है।

बता दें कि यह बेहद शांत जगह है, जहां पर आप सुकून के दो पल बिता सकते हैं। यह बंगाल के सबसे साफ-सुथरे बीचेज में से एक माना जाता है। शंकरपुर में एक तरफ समुद्र की लहरें और दूसरी तरफ सफेद रेत देखने को मिलेगी। इसके साथ ही आप यहां पर शानदार और मजेदार वॉटर स्पोर्ट्स का भी लुत्फ उठा सकते हैं।

ताजपुर

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से करीब 172 किमी दूर ताजपुर एक बेहद खूबसूरत और फेमस समुद्र तटीय जगह है। यह बेहद खूबसूरत जगह राज्य के मंदारमणि और शंकरपुर के बीच स्थित है।

सैलानियों को ताजपुर बीच सबस ज्यादा आकर्षिक करता है। आप इस बीच से राज्य की खूबसूरती को करीब से निहार सकते हैं। ताजपुर में भारत की सबसे डीप सी बंदरगाह का निर्माण किया जा रहा है। आपको यहां का सनसेट और सनराइज का बेहद शानदार नजारा मिस नहीं करना चाहिए।

मंदारमणि

बता दें कि कोलकाता से करीब 171 किमी और दीघा से 30 किमी दूर मंदारमणि गांव स्थित है। यहां पर भारी संख्या में पर्यटक घूमने के लिए पहुंचते हैं।

इस गांव में मंदारमणि बीच राज्य के सबसे ट्रेंडी बीच रिट्रीट में से एक माना जाता है। यहां का शांत माहौल और मनमोहक नजारा पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां पर आप वॉटर एक्टिविटी का भी लुत्फ उठा सकते हैं। सर्दियों में घूमने के लिहाज से यह एक बेस्ट जगह है।

संक्षिप्त समाचार

अंतिम ग्यारह में जगह मिलने का भरोसा दिये जाने पर ही ऑस्ट्रेलिया गये थे अश्विन

मुम्बई। अनुभवी स्पिनर आर अश्विन के अचानक लिए संन्यास से सभी हैरान हैं। अश्विन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट के ड्रॉ होने पर खेल को अलविदा कह दिया था। वहीं अब एक रिपोर्ट से सामने आया है कि अश्विन अंतिम ग्यारह में जगह मिलने का भरोसा दिये जाने पर ही ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाने के लिए तैयार हुए थे। वहीं अब उन्हें दो मैचों से बाहर रखा गया तो उन्होंने खेल को अलविदा कहना तय कर लिया। अश्विन को शायद यह संकेत मिल गया था कि उन्हें बाकी दो बचे मैचों में भी मौका नहीं मिलने वाला है, इसलिए उन्होंने तीसरे टेस्ट के बाद ही यह फैसला ले लिया है। न्यूजीलैंड के खिलाफ मिली 0-3 से हार के बाद से ही संन्यास का विचार उनके दिमाग में था। रिपोर्ट में कहा गया है कि अश्विन, जिन्होंने 106 टेस्ट मैचों में 537 विकेट लेकर अपना करियर समाप्त किया।

पुजारा और रहाणे के लिए अभी बंद नहीं हुए टीम के दरवाजे: रोहित

ब्रिसबेन। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा ने अभी संन्यास नहीं लिया है। ऐसे में इन लोगों के लिए टीम के दरवाजे अभी खुले रहेंगे। रोहित ने कहा कि अभी केवल आर अश्विन ने ही संन्यास की घोषणा की है। अश्विन के संन्यास को लेकर जब उनसे पूछा गया कि एक के बाद एक अपने साथी खिलाड़ियों से बिछड़ना कैसा लगता है तो रोहित ने कहा कि खिलाड़ियों का आना जाना खेल का हिस्सा भर है और वह अधिकांश खिलाडियों के संपर्क में हैं। साथ ही कहा कि हमने साथ में इतना खेला है कि इसलिए उनकी कमी खलने खलती है।

भारतीय टीम उत्साहित होकर मेलबर्न पहुंची

मेलबर्न। भारतीय क्रिकेट टीम मेजबान ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉक्सिंग डे से होने वाले चौथे क्रिकेट टेस्ट मैच के लिए यहां पहुंच गयी है। अभी तक ये सीरीज 1-1 से बराबरी पर है। पहला टेस्ट भारतीय टीम ने जीता था जबकि दूसरा मेजबान ऑस्ट्रेलिया ने जीता। मेलबर्न क्रिकेट मैदान (एमसीजी) पिछले एक दशक से भारतीय टीम के लिए अच्छा साबित हुआ है और एक प्रकार से घरेलू मैदान की तरह ही बन गया है। भारतीय टीम ने पिछले एक दशक में यहां 3 टेस्ट मैच खेले हैं। इनमें से उसे दो में जीत मिली है जबकि मेजबान टीम एक भी मैच नहीं जीती है। दोनों टीमें अब 26 दिसंबर से ही यहां खेलेंगी।

आईसीसी मीटिंग में फैसला, चैंपियंस ट्रॉफी में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे

भारत-पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में नहीं खेलेंगी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और पाकिस्तान की टीमें एक-दूसरे के देश में जाकर क्रिकेट नहीं खेलेंगी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के सभी मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे। पाकिस्तानी टीम भी 2027 तक किसी भी टूर्नामेंट के लिए भारत नहीं आएगी। उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे।

आईसीसी की इस फैसले की जानकारी गुरुवार को सामने आई। मीटिंग में यह फैसला पहले ले लिया गया था। भारत में 2025 विमेंस वनडे वर्ल्ड कप, 2026 में टी-20 वर्ल्ड कप भारत और श्रीलंका में होना है।

इससे पहले जब ढ्ढष्टष्ट ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को हाइब्रिड मॉडल में कराने की बात पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को बताई थी, तब डब्ल्यूपीसी ने आईसीसी के सामने भारत में टीम न भेजने की मांग रखी थी, जिसे अब आईसीसी ने मान लिया है। 2028 विमेंस वर्ल्ड कप पाकिस्तान में आईसीसी बोर्ड ने कन्फर्म किया कि विमेंस वर्ल्ड कप 2028 पाकिस्तान में खेला जाएगा। इस टूर्नामेंट में भी भारतीय और पाकिस्तान की महिला टीम के मैच न्यूट्रल वेन्यू पर खेले जाएंगे।

सभी 15 मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए माने आईसीसी के नए चेयरमैन जय शाह की मौजूदगी

में 5 दिसंबर को सभी बोर्ड मेंबर्स की मीटिंग हुई थी। शाह इसी महीने दुबई स्थित हेडक्वार्टर भी पहुंचे थे। मीटिंग में सभी 15 बोर्ड मेंबर्स हाइब्रिड मॉडल के लिए मान गए। पाकिस्तान ने भी मीटिंग में फैसले का विरोध नहीं किया। पीसीबी ने भारत के साथ ट्राई सीरीज कराने की मांग की पीसीबी ने भविष्य में भारत के साथ किसी न्यूट्रल वेन्यू पर ट्राई सीरीज कराने की मांग की, लेकिन बीसीसीआई और आईसीसी दोनों ने इस पर हामी नहीं भरी। भारत और पाकिस्तान के बीच 2012 से कोई सीरीज नहीं हुई है, दोनों टीमें आईसीसी और एसीसी टूर्नामेंट में ही भिड़ीं हैं।

भारत में कोई टूर्नामेंट हो तो उसके मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर हों पाकिस्तान की यह मांग आईसीसी ने मान ली है। अब भारत में कोई टूर्नामेंट होगा तो पाकिस्तानी टीम के मैच भी न्यूट्रल वेन्यू पर होंगे। हालांकि बीसीसीआई ने पहले कहा था कि भारत में सिक्योरिटी को लेकर कोई परेशानी नहीं है, इसलिए पाकिस्तान के मैच न्यूट्रल वेन्यू पर न हों। चैंपियंस ट्रॉफी के 5 मैच पाकिस्तान से छीने गए, पीसीबी ने इसके लिए कॉम्पेनसेशन भी मांगा, इस डिमांड को आईसीसी ने पहले ही मान लिया था।

भारत के ग्रुप में नहीं रहना चाहता पाकिस्तान पीसीबी ने यह भी डिमांड रखी कि अगर भारत न्यूट्रल वेन्यू पर ही खेलना चाहता है तो पाकिस्तान को उसके ग्रुप से अलग कर दिया जाए, ताकि पाकिस्तान अपने सभी ग्रुप मैच होम ग्राउंड पर ही खेले, लेकिन आईसीसी और बीसीसीआई के साथ ब्रॉडकास्टर्स ने भी उनकी इस मांग का विरोध कर दिया, क्योंकि किसी भी टूर्नामेंट में भारत-पाकिस्तान मैच ब्लॉकबस्टर इवेंट की तरह रहता है। चैंपियंस ट्रॉफी में दोनों टीमें 1 मार्च को दुबई में भिड़ सकती हैं। फाइनेंशियल ईयर का रेवेन्यू बढ़ाया जाए पीसीबी चाहता है कि उसके फाइनेंशियल ईयर का रेवेन्यू 5.75 परसेंट से बढ़ाया जाए। साथ ही 2031 तक भारत में होने वाले सभी बड़े इवेंट हाइब्रिड मॉडल में ही हों। फैसले में देरी क्यों हुई शुरुआत में भारत ने इस टूर्नामेंट के लिए अपनी टीम पाकिस्तान भेजने से इनकार कर दिया था। पाकिस्तान पहले तो इस बात पर अड़ा रहा कि भारत को पाकिस्तान आना ही होगा, लेकिन भारत के सख्त रुख के बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड आखिरकार हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार हो गया है।

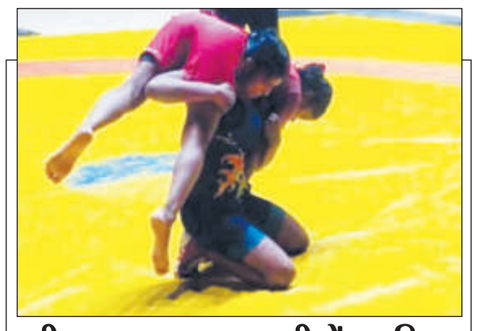

फ्री स्टाइल ट्रायल कुश्ती में 8 महिला पहलवान आयी प्रथम

वाराणसी, एजेंसी। उत्तर प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश कुश्ती संघ के समन्वय से 25 से 27 दिसंबर, 2024 तक मऊ जनपद में जूनियर बालिका राज्य स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। इस कुश्ती का ट्रायल आज वाराणसी में डॉक्टर संपूर्णानंद स्पोर्ट्स कंपलेक्स, सिगरा, वाराणसी में किया गया। सभी महिला पहलवान वाराणसी का प्रतिनिधित्व करेगी।

बालिका फ्रीस्टाइल जूनियर वर्ग 50 किलो में रेशमा यादव, 53 किलो में सृष्टि यादव, 55 किलो में प्रिया, 57 किलो में अर्चना प्रजापति, 59 किलो में खुशबू कुमारी, 62 किलो में संतोषी राजभर, 65 किलो में अनु पाल, 68 किलो में अर्पिता कुमारी नें प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का मण्डल स्तरीय ट्रायल संपूर्णानन्द स्पोर्ट्स कंपलेक्स सिगरा, वाराणसी में 20 दिसंबर,2024 को किया जाएगा।

राष्ट्रीय शालेय रग्बी प्रतियोगिता में चार खिलाड़ियों का चयन

पिपरिया, निप्र। शासकीय सीएम राइज राज स्कूल पिपरिया के चार खिलाड़ियों चयन मध्य प्रदेश की टीम में हुआ। प्रतियोगिता बिहार प्रदेश के पटना में 23 दिसंबर से 28 दिसंबर तक आयोजित होगी जिसमें खिलाड़ी मध्य प्रदेश टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे।

शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शालेय रग्बी प्रतियोगिता जो कि बिहार के पटना में आयोजित होगी जिसमें जिला नर्मदापुरम के शासकीय सी एम राइज आर एन ए स्कूल के चार खिलाड़ियों का चयन मध्यप्रदेश टीम में किया गया है। खिलाड़ियों का चयन इंदौर में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर किया गया है। अंडर 19 आयु वर्ग बालक में राघवेंद्र अहिरवार, बालिका वर्ग में प्रिया मवासी, अंडर 17 आयु वर्ग में बालिका आकांक्षा नायर, बालक में निलेश अहिरवार का चयन किया गया है। खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर संयुक्त संचालक लोक शिक्षण नर्मदापुरम श्रीमति भावना दुबे, जिला शिक्षा अधिकारी श्री एस पी एस बिसेन, संभागीय क्रीड़ा अधिकारी श्री गजेंद्र सुराजिया ,जिला क्रीड़ा अधिकारी वंदना रघुवंशी, विकास खंड शिक्षा अधिकारी एस एल रघुवंशी, प्राचार्य सीएम राइस आर एन ए स्कूल संजीव दुबे,बीआरसी प्रदीप कुमार शर्मा,विकासखंड खेल प्रभारी अरविंद कुमार शर्मा, खेल शिक्षक उमेश बरैया, खेल समन्वयक प्रीतम सिंह पुर्विया, प्रशिक्षक सचिन पुर्विया, रेणुका कन्नौजिया, जिला रग्बी संघ नर्मदापुरम के सभी पदाधिकारी एवं शाला परिवार और नगर के वरिष्ठ खिलाडियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

2 ही मैच बाकी, साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के पास हैं ज्यादा मौके

डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए भारत को चाहिए 2 जीत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच ब्रिस्बेन में तीसरा टेस्ट ड्रॉ हो गया। इस नतीजे के बाद दोनों के बीच 5 मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर है। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप पॉइंट्स टेबल में ऑस्ट्रेलिया नंबर-2 और भारत नंबर-3 पर कायम है। साउथ अफ्रीका पहले नंबर पर है। भारत को अपने दम पर फाइनल में पहुंचने के लिए बचे हुए दोनों मैच जीतने ही होंगे। दूसरी ओर ऑस्ट्रेलिया 4 में से 3 मैच जीत ले तो टॉप-2 में फिनिश कर जाएगा। वहीं, साउथ अफ्रीका को पाकिस्तान के खिलाफ 2 टेस्ट में एक ही जीत की जरूरत है। भारत तीसरे नंबर पर, 2 जीत चाहिए ब्रिस्बेन में ड्रॉ खेलने के बाद भी भारत के डब्ल्यूटीसी फाइनल में पहुंचने की उम्मीदें जिंदा हैं। भारत के 17 मैचों में 9 जीत, 6 हार और 2 ड्रॉ से 114 पॉइंट्स हैं। टीम पर 2 पॉइंट्स की पेनल्टी लगी थी, इसलिए फिलहाल 55.88त्न पॉइंट्स के साथ उसकी पोजिशन नंबर-3 है। भारत के अब 2 मैच ऑस्ट्रेलिया से ही मौजूदा सीरीज में बाकी है। टीम एक भी मैच हारी तो फाइनल की रेस से बाहर हो जाएगी।

सीरीज 3-1 से भारत जीते, 60.53त्न पॉइंट्स- टीम इंडिया क्वालिफाई हो जाएगी। सीरीज 2-1 से भारत जीते, 57.02त्न पॉइंट्स- ऑस्ट्रेलिया टीम श्रीलंका में 1-0 से जीते या साउथ अफ्रीका टीम पाकिस्तान से 0-1 से हार जाए।

सीरीज 2-2 से ड्रॉ, 55.26त्न पॉइंट्स- ऑस्ट्रेलिया टीम श्रीलंका में 0-1 से हारे या साउथ अफ्रीका पाकिस्तान से 0-2 से हार जाए। सीरीज 1-1 से ड्रॉ, 53.51त्न पॉइंट्स- साउथ अफ्रीका 2-0 से हारे या ऑस्ट्रेलिया टीम श्रीलंका में 0-1 से हारे या 0-0 से ड्रॉ खेले। अगर श्रीलंका 2-0 से जीत गया तो भारत बाहर हो जाएगा।

व्यापार समाचार

भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते के तहत रोजगार सृजन और विकास के अवसरों पर चर्चा

भारत ब्रिटेन के लिए एक महत्वपूर्ण साझेदार है और हम संबंधों को और मजबूत करेंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश उच्चायोग की ओर से जारी बयान के अनुसार, भारतीय निवेशकों और मुख्य कार्यकारी अधिकारियों ने प्रस्तावित भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते के तहत रोजगार सृजन और विकास के अवसरों पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों से भी मुलाकात की। बयान के अनुसार ब्रिटिश पीएम स्टार्मर ने नए वर्ष की शुरुआत में मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत फिर से शुरू करने की पुष्टि की है। आइए इस बारे में और जानें। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने लंदन स्थित अपने आधिकारिक आवास 10 डाउनिंग स्ट्रीट में 13 भारतीय कंपनियों के प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की। ब्रिटिश सरकार ने मुलाकात को द्विपक्षीय साझेदारी बढ़ाने और निवेश प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए एक सुव्यवस्थित पहल बताया।

बुधवार को यह मुलाकात पिछले महीने जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ स्टार्मर की बैठक के बाद हुई। सम्मेलन के दौरान दोनों नेताओं ने आर्थिक विकास, सुरक्षा व रक्षा, प्रौद्योगिकी, जलवायु, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग के अवसरों के साथ एक

महत्वाकांक्षी व्यापक रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई थी।

नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश उच्चायोग की ओर से जारी बयान के अनुसार, भारतीय निवेशकों और मुख्य कार्यकारी अधिकारियों ने प्रस्तावित भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते के तहत रोजगार सृजन और विकास के अवसरों पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ कैबिनेट मंत्रियों से भी मुलाकात की। बयान के अनुसार ब्रिटिश पीएम स्टार्मर ने नए वर्ष की शुरुआत में मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत फिर से शुरू करने की पुष्टि की है।

स्टार्मर ने व्यापारिक बैठक के संदर्भ में कहा, भारत ब्रिटेन के लिए एक महत्वपूर्ण साझेदार है और हम अपने पहले से ही मजबूत संबंधों को और मजबूत करते हुए, साथ मिलकर और अधिक अवसरों का लाभ उठाने की महत्वाकांक्षा रखते हैं।

उन्होंने कहा, मुझे भारत के कुछ वरिष्ठतम व्यापारिक नेताओं का डाउनिंग स्ट्रीट में स्वागत करते हुए तथा आर्थिक विकास और नवाचार पर ब्रिटेन के महत्वाकांक्षी फोकस को रेखांकित करते हुए खुशी हो रही है। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की ओर से समर्थित प्रतिनिधिमंडल ने राजकोष के चांसलर रेचेल रीव्स और विदेश सचिव डेविड लैमी के साथ संबंधों को गहरा करने पर चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भारती एंटरप्राइजेज के संस्थापक और अध्यक्ष सुनील भारती मित्तल ने किया, जिसने इस साल बीटी ग्रुप में एक बड़ा निवेश पूरा किया है।

मित्तल ने कहा, यह व्यापार प्रतिनिधिमंडल एक महत्वपूर्ण क्षण पर आ रहा है, क्योंकि भारत सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2027 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है।

अजित पवार ने केंद्र को पत्र लिखकर की मांग

प्याज पर 20 फीसदी निर्यात शुल्क हटाएं..

नागपुर, एजेंसी। उप मुख्यमंत्री अजित पवार ने केंद्र सरकार को पत्र लिखकर महाराष्ट्र के प्याज किसानों का मुद्दा उठाया है। उन्होंने केंद्र से अनुरोध प्याज पर 20 फीसदी निर्यात शुल्क को हटाने का आग्रह किया।

महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार ने गुरुवार को भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार से अनुरोध किया कि वह प्याज के निर्यात पर 20 फीसदी शुल्क हटा दे, ताकि प्याज उगाने वाले किसानों को राहत मिल सके। पवार ने केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखा है और नासिक जिले के किसानों का मुद्दा उठाया है। नासिक बड़ी मात्रा में प्याज का उत्पादन होता है।

पत्र में अजित पवार ने लिखा, यहां (नासिक में) उगाए गए प्याज अन्य राज्यों में बड़े पैमाने पर निर्यात किए जाते हैं। गर्मी के सीजन का प्याज खत्म हो चुका है और इसकी ताजा फसल महाराष्ट्र के विभिन्न कृषि उत्पाद बाजार समितियों में पहुंच चुकी है। उन्होंने कहा, प्याज की बड़ी मात्रा आने के कारण किसान अब परेशान हैं, क्योंकि उन्हें अपनी उपज बहुत कम कीमत पर बेचनी पड़ रही है। इसके कारण उन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने कहा, किसान प्याज को औसदन 2,400 रुपये प्रति क्विंटल बेच रहे हैं।

पवार ने कहा, अनियमित बारिश और बदलते मौसम ने पहले प्याज किसानों की आय में भारी

कमी की है। उप मुख्यमंत्री नागपुर में महाराष्ट्र विधानसभा के शीतकालीन सत्र में शामिल होने के लिए आए हैं। उन्होंने कहा, अगर किसानों को उत्पादन लागत से कम कीमत पर प्याज बेचना पड़ा, तो उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। उन्होंने यह भी कहा कि विदेश में महाराष्ट्र से प्याज की बड़ी मांग है। महाराष्ट्र देश का सबसे बड़ा प्याज उत्पादक राज्य है और नासिक जिले के लासलगांव में एशिया का सबसे बड़ा प्याज का थोक बाजार है।

पत्र में उन्होंने कहा, केंद्र ने प्याज के निर्यात पर 20 फीसदी शुल्क लगा रखा है, जिससे राज्या का यह मुख्य उपभोक्ता उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रहा है। उन्होंने कहा, 20 फीसदी शुल्क हटाने से किसान राहत महसूस करेंगे और अपने नुकसान की कुछ भरपाई कर पाएंगे।

इंदौर में देश के सबसे बड़े म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स का सम्मेलन

इन्दौर। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में स्थानीय ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, इंदौर में आज 20 दिसंबर 2024 को म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसिएशन (सेंट्रल इंडिया) द्वारा म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स और वित्तीय विशेषज्ञों के देश के सबसे बड़े आयोजन निवेश मंत्रणा 2024, का आयोजन किया जा रहा है। मीडिया पीआरओ अभिलाष जैन के अनुसार सीएम म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर्स को संबोधित करेंगे और भारत के बढ़ते वित्तीय परिदृश्य में म्यूचुअल फंड उद्योग के महत्व पर प्रकाश डालेंगे। अध्यक्ष राजेश कुलवाल के अनुसार इस सम्मेलन में पूरे देश से 700 से अधिक डिस्ट्रीब्यूटर्स और वित्तीय विशेषज्ञ शामिल होने जा रहे हैं। कुलवाल के अनुसार कार्यक्रम की प्रतिष्ठा को और बढ़ाते हुए 10 से अधिक म्यूचुअल फंड कंपनियों के सीईओ और नेशनल हेड्स भी वक्ता के रूप में शामिल होंगे।

गोदरेज प्रोफेशनल ने शरवरी को ब्रांड एंबेसडर बनाया

मुंबई। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) का प्रमुख प्रोफेशनल हेयर ब्रांड, ने बॉलीवुड की उभरती हुई अभिनेत्री शरवरी को अपना पहला ब्रांड एंबेसडर घोषित किया है। शरवरी, जो मुंज्या, महाराज और वेद जैसी फिल्मों में अपनी बेहतरीन अभिनय के लिए जानी जाती हैं, अपने फैशन-फॉरवर्ड व्यक्तित्व और आत्मविश्वास के साथ ब्रांड की प्रतिबद्धता को बखूबी दिखाती हैं। इस गठजोड़ पर टिप्पणी कर गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड के अधिकारी ने कहा कि शरवरी के पास लाखों लोग हैं, जो उनकी स्टाइल और ग्रेस को पसंद करते हैं, और उनका गोदरेज प्रोफेशनल के साथ जुड़ाव एक महत्वपूर्ण विकास है।

गोल्ड लोन मे रिकॉर्ड 56 फ़ीसदी की वृद्धि

मुंबई। देश में सोने पर लोन लेने वालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती चली जा रही है। पिछले 1 वर्ष में गोल्ड लोन मैं 56 फ़ीसदी की वृद्धि हुई है। होम लोन में 18 फ़ीसदी की वृद्धि हुई है ।बाकी सभी सेक्टर में लोन लेने वालों की संख्या घटी है ।केवल गोल्ड में कर्ज लेने वालों संख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। प्रमुख 9 कैटेगरी में लोन के सबसे अधिक 56 फ़ीसदी की तेजी गोल्ड लोन में देखी गई है। इसके बाद 18 फ़ीसदी की वृद्धि हाउसिंग लोन में है ।जो दूसरे नंबर पर है। पर्सनल लोन लेने वालों की संख्या 11 फ़ीसदी बढ़ी है। पिछले वर्ष 23 फ़ीसदी थी।

स्पाइसजेट ने जेनेसिस के साथ 1.6 करोड़ डॉलर से अधिक का विवाद सुलझाया

नई दिल्ली, एजेंसी। एयरलाइन ने कहा कि समझौते के तहत, स्पाइसजेट जेनेसिस को 60 लाख डालर का भुगतान करेगी और जेनेसिस 100 रुपये प्रति शेयर के मूल्य पर 40 लाख डॉलर के स्पाइसजेट इक्विटी का अधिग्रहण करेगी। एयरलाइन के अनुसार इस समझौते से एयरलाइन को महत्वपूर्ण बचत भी होगी, और यह दीर्घकालिक विकास की ओर बढ़ेगा। भारतीय एयरलाइन स्पाइसजेट ने वाणिज्यिक विमान पट्टे पर देने वाली कंपनी डबलिन स्थित जेनेसिस एयरक्राफ्ट सर्विसेज के साथ 1.6 करोड़ अमेरिकी डालर से अधिक के विवाद का निपटारा कर लिया है। कंपनी ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी।

एयरलाइन ने कहा कि समझौते के तहत, स्पाइसजेट जेनेसिस को 60 लाख डालर का भुगतान करेगी और जेनेसिस 100 रुपये प्रति शेयर के मूल्य पर 40 लाख डॉलर के स्पाइसजेट इक्विटी का अधिग्रहण करेगी। एयरलाइन के अनुसार इस समझौते से एयरलाइन को महत्वपूर्ण बचत भी होगी, और यह दीर्घकालिक विकास की ओर बढ़ेगा। जेनेसिस के साथ समझौता स्पाइसजेट की वित्तीय स्थिरता बहाल करने, परिचालन में लचीलापन हासिल करने और कानूनी देनदारियों को कम करने की प्रतिबद्धता के तहत उठाया गया है। समझौते के तहत, दोनों पक्ष उचित मंचों पर इस मामले से संबंधित सभी मुकदमों और विवादों को सुलझाने पर सहमत हुए हैं।

स्पाइसजेट के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक अजय सिंह ने कहा, यह समझौता वित्तीय स्थिरता की दिशा में हमारी यात्रा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। हमें रचनात्मक बातचीत के माध्यम से जेनेसिस के साथ इस मामले को सौहार्दपूर्ण ढंग से हल करने की खुशी है। यह समझौता, जिसमें जेनेसिस स्पाइसजेट में इक्विटी हिस्सेदारी हासिल करेगा।

62 प्रतिशत एसआईपी में करते हैं निवेश

कोरोना काल के बाद तेजी से बढ़ी भविष्य के लिए बचत की प्रवृत्ति

नई दिल्ली, एजेंसी। बैंक बाजार की मनीमूड रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 47 फीसदी लोग मुनाफे, 44 फीसदी लाइफस्टाइल बेहतर करने, 42 फीसदी घूमने, 31 फीसदी सेवानिवृत्ति, 28 फीसदी लग्जरी उत्पादों पर खर्च करने और 27 फीसदी लोग कौशल विकास के लिए बचत कर रहे हैं।

कोरोना महामारी के दौर में लगे झटकों के बाद लोगों में बचत करने की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ी है और खासकर आपातकालीन खर्चों के लिए। अब आलम यह है कि सबसे ज्यादा 61 फीसदी लोग संकट के समय में घर के जरूरी खर्चे चलाने के लिए बचत कर रहे हैं। इसके बाद 48 फीसदी लोग बच्चों की बेहतर परवरिश के लिए पैसा बचा रहे हैं।

बैंक बाजार की मनीमूड रिपोर्ट में दावा किया गया है कि 47 फीसदी लोग मुनाफे, 44 फीसदी लाइफस्टाइल बेहतर करने, 42 फीसदी घूमने, 31 फीसदी सेवानिवृत्ति, 28 फीसदी लग्जरी उत्पादों पर खर्च करने और 27 फीसदी लोग कौशल विकास के

लिए बचत कर रहे हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि लंबी अवधि में बचत करने के लिए लोग फिक्स्ड एवं रिकरिंग डिपॉजिट की जगह अब म्यूचुअल फंड एसआईपी में अधिक निवेश कर रहे हैं। इस साल 62 फीसदी लोगों ने एसआईपी में पैसा लगाया है, जो 2022 के 57 फीसदी की तुलना में पांच फीसदी अधिक है। फिक्स्ड एवं रिकरिंग डिपॉजिट में अपनी गाढ़ी कमाई?लगाने वालों की संख्या 54 फीसदी की तुलना में बढ़कर 57 फीसदी पहुंच गई?है।?

दिवाली पर रिकॉर्ड दो लाख करोड़ खर्च: इस साल दिवाली वाले महीने में लोगों ने दो लाख करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर दिए। 2023 में यह 1.6 लाख करोड़ रुपये था।

इस दौरान कुल 43.3 करोड़ लेनदेन हुए। 2023 में यह 29.7 करोड़ था। दिवाली वाले महीने में लोगों ने औसतन 4,659 रुपये खर्च किए। यह 2023 के 5,577 रुपये से कम है। प्रति क्रेडिट कार्ड औसतन खर्च 2023 के 16,734 रुपये से बढ़कर 18,878 रुपये पहुंच गया।

सेवानिवृत्ति: 58 फीसदी लोगों के पास पर्याप्त फंड: मनीमूड रिपोर्ट के मुताबिक, सेवानिवृत्ति के बाद बेहतर जीवन जीने के लिए 58 फीसदी लोगों ने पर्याप्त फंड जमा कर रखा है। 42 फीसदी लोगों के पास कोई सेवानिवृत्ति फंड नहीं है।

रिटायरमेंट के लिए बचत लक्ष्य = छह फीसदी लोगों ने सेवानिवृत्ति के लिए 25 लाख रुपये से अधिक बचत का लक्ष्य रखा है। 19 फीसदी लोग 25-50 लाख और 17 फीसदी लोग 50-75 लाख रुपये की बचत को पर्याप्त मानते हैं।

संक्षिप्त समाचार

सीएमओ और अध्यक्ष व पार्षद की तकरार बरकरार पार्षदों ने की कलेक्टर से शिकायत भ्रष्टाचार के लगाए गंभीर आरोप

टीकमगढ़। मध्य प्रदेश में टीकमगढ़ के बड़ागांव नगर परिषद में सीएमओ ज्योति सुनेरे को हटाने की मांग को लेकर अध्यक्ष सहित समस्त पार्षदों का विरोध थमने का नाम नहीं ले रहा है। सीएमओ पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए गए हैं, जिनमें आवास निर्माण कार्यों और खरीदी में अनियमितता का मामला सामने आया है। दरअसल, बड़ागांव सीएमओ ज्योति सुनेरे पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए गए हैं। उनके खिलाफ निंदा प्रस्ताव देने तक पार्षद तैयार हैं। बीते दिनों उनके द्वारा रात्रि में धरना भी दिया था। वहीं आज अध्यक्ष सहित समस्त पार्षदों ने टीकमगढ़ कलेक्टर अवधेश शर्मा से शिकायत की। उनके द्वारा आवास निर्माण कार्यों मे खरीदी में भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। साथ ही विशेष सत्र बुलाने की बात कही है। मामले को लेकर जिला कलेक्टर ने कहा कि, मामले की जानकारी सम्बंधित विभाग को भेज कर उचित कार्रवाई की जाएगी।

सुशासन दिवस और वीर बालदिवस पर होगा आयोजन

सीहोर। सीहोर में आगामी 25 दिसंबर को देश के पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन को सुशासन दिवस और 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इसके लिए जिला महामंत्री धारासिंह पटेल को जिला प्रभारी और भूपेंद्र सिंह सिसोदिया, ओम पटेल को सह प्रभारी नियुक्त किया है। जिला अध्यक्ष रवि मालवीय ने बताया कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाएगा। वहीं 26 दिसम्बर को साहिबजादों की शहादत की स्मृति में वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। दोनों कार्यक्रमों के लिए जिला महामंत्री धारासिंह पटेल को जिला प्रभारी और भूपेंद्रसिंह सिसोदिया, ओम पटेल को सह प्रभारी नियुक्त किया है।

जिला पंचायत के प्रभारी सीईओ के खिलाफ प्रदर्शन

जबलपुर। घंटाघर क्षेत्र में आदिवासी बहुजन कल्याण संघ ने जिला पंचायत की कार्य प्रणालियों के विरोध में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान संघ ने तहसीलदार को कलेक्टर के नाम एक मांग पत्र सौंपा। संगठन के नेता देवेश चौधरी ने आरोप लगाया कि जबलपुर जिला पंचायत में पूर्णकालिक सीईओ की अनुपस्थिति में प्रभारी सीईओ अपनी हठधर्मिता और मनमानी से आरक्षित वर्ग के कर्मचारियों के जायज मामलों का समाधान करने के बजाय उन्हें परेशान कर रहे हैं। देवेश चौधरी ने यह भी आरोप लगाया कि जिला पंचायत में प्रतिनियुक्त लेखाधिकारी साकेत जैन, प्रभारी सीईओ को गुमराह कर पूरे जिला पंचायत में असंतोष का माहौल बना रहे हैं। मैदानी स्तर के पीसीओ, एडीईओ और सचिव इनकी कार्यप्रणाली से त्रस्त हैं।

इंदौर क्राइम ब्रांच ने दिल्ली से ड्रग तस्कर को पकड़ा

इंदौर। इंदौर क्राइम ब्रांच ने नाइजीरिया मूल के व्यक्ति को पकड़ा है। आरोपी विदेशों से एमडी ड्रग मंगवा कर देशभर में सप्लाई करता था। टीम उसे दिल्ली में गिरफ्तार कर गुरुवार रात इंदौर लेकर आई है। इंदौर क्राइम ब्रांच ने दिल्ली से एंथनी नाम के व्यक्ति को पकड़ा है। पिछले दिनों क्राइम ब्रांच ने एमडी ड्रग को लेकर बड़ी कार्रवाई की थी। यहीं से आरोपी का इनपुट मिला था। आरोपी को पकड़ने के लिए अलग-अलग टीमें दिल्ली भेजी गई थी। गिरफ्तारी के दौरान काफी मात्रा में एमडी ड्रग बरामद हुई है।

15 साल की लड़की से शादी पर पति गिरफ्तार

ग्वालियर। ग्वालियर की उटीला पुलिस ने 15 साल की नाबालिग की शादी कराने पर पिता, सास, ससुर पर केस दर्ज किया है। लड़की के पति को भी रेप के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया है। उटीला थाना प्रभारी शिवम सिंह राजावत ने बताया कि इसी साल जुलाई में नाबालिग की शादी हुई। आरोप है कि पति ने उसके साथ मारपीट की। दहेज की मांग करने लगा। कुछ दिन पहले नाबालिग से मिलने उसके चाचा की बेटी आई, तब पता चला कि उसके साथ अत्याचार हो रहा है।

कांग्रेस नेता के वेयर हाउस से 16हजार बोरी गेहूं गायब

12 हजार बोरियों में भूसा और डस्ट मिला; 3 करोड़ से अधिक का सरकारी गेहूं में हेराफेरी

उज्जैन ■ निसं

जिले में सरकारी गेहूं की हेराफेरी का बड़ा मामला सामने आया है। किसानों से समर्थन मूल्य पर खरीदा गया गेहूं प्रशासन ने कांग्रेस नेता विजय सिंह गौतम के वेयर हाउस में रखा था। इसकी कीमत 3 करोड़ रुपए से अधिक थी। अब वेयर हाउस से 16168 बोरी (50-50 किलो की) गायब है। वहीं करीब 12 हजार गेहूं की बोरियों में केवल डस्ट, भूसा और छानन भरा मिला।

घट्टिया तहसील के पानबिहार क्षेत्र के ग्राम बच्चूखेड़ी में श्री गौतम वेयर हाउस है। इसकी प्रोपाइटर लक्ष्मीबाई और संचालक कांग्रेस नेता विजय सिंह हैं। इस वेयर हाउस में प्रशासन ने वर्ष 2020-21 में खरीदा गेहूं अनुबंध के तहत रखा था, ताकि उसे कंट्रोल दुकान से वितरित करवाया जा सके या जरूरत के हिसाब से अन्य योजनाओं में उपयोग लिया जा सके।

ऐसे पकड़ में आई गड़बड़ी यह वेयर हाउस घट्टिया की खिलचीपुर शाखा के तहत आता है। शाखा प्रबंधक भगवान पटेल ने वेयर हाउस में रखे गेहूं की गुणवत्ता (वर्तमान में अनाज उपयोग लायक है या नहीं) चेक करने का आग्रह जिला स्तर के अधिकारियों से किया था। टीम जब वेयर हाउस पर निरीक्षण करने पहुंची तो इन्हें यहां गड़बड़ी की आशंका हुई थी। इसके बाद जांच के लिए टीम बनी। गुरुवार को एसडीएम राजाराम करजरे के नेतृत्व 8-10 अधिकारी जांच के लिए वेयर हाउस पहुंचे थे। इन्होंने मौके पर पंचनामा बनाया और वेयर हाउस को सील कर दिया। संभवत: टीम शुक्रवार तक जांच रिपोर्ट कलेक्टर को सौंप देगी।वेयर हाउस में जो 12 हजार 6 बोरियां मिली, उनमें गेहूं की बजाय डस्ट,भूसा व छानन भरा मिला। वो भी 50 किलो नहीं था, कम मात्रा में था।

इस तरह जो गायब हुई (16 हजार 168 बोरी) और जो वेयर हाउस में मिली (12 हजार 6 बोरी) का जांच टीम के हिसाब से कुल गेहूं 14 हजार 87 क्विंटल होता है। जिसकी कीमत 2400 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से 3 करोड़ रुपए से अधिक है। इतनी ही राशि के गेहूं की गड़बड़ी होना मानी जा रही हैं।

इधर, इस पूरे मामले में जब वेयर हाउस के संचालक विजय सिंह गौतम से बात की गई तो उन्होंने कहा कि तीन महीने से उनके पास वेयर हाउस की चाबी तक नहीं है। चाबी वेयर हाउस कॉर्पोरेशन वालों ने ले ली। उनका बकाया डेढ़ करोड़ रुपया भी उन्हें नहीं दिया जा रहा है। पांच साल पहले गेहूं वेयर हाउस में रखा था, मैंने करीब 10 रिमाइंडर अधिकारियों को भेजे कि वे उनका गेहूं उठा लें, लेकिन उन्होंने नहीं उठाया। अब गेहूं की हालत ये हो गई कि बोरी उठाए तो वो पूरी तरह से सड़ गया है।

इंदौर की हिंदू युवती-जबलपुर के हसनैन की शादी हो सकेगी

हाईकोर्ट ने कहा-स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत प्रेमी जोड़े को अधिकार

जबलपुर ■ निसं

इंदौर की हिंदू युवती और जबलपुर के मुस्लिम युवक की शादी का रास्ता साफ हो गया है। बहुचर्चित इंटर रिलीजन मैरिज आवेदन के मामले में जबलपुर हाईकोर्ट में गुरुवार को सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैथ और जस्टिस विवेक जैन की बेंच ने फैसला सुनाते हुए कहा कि स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 की धारा 4 के तहत प्रेमी जोड़े को शादी का अधिकार है, लिहाजा दोनों शादी कर सकते हैं।

दरअसल, कुछ दिनों पहले इंदौर की हिंदू युवती और सिहोरा के हसनैन अंसारी ने विवाह करने के लिए जबलपुर अपर कलेक्टर की कोर्ट में आवेदन दिया था। जिसको लेकर हिंदू संगठन सहित लड़की के माता-पिता ने जमकर हंगामा भी किया था। शादी के विरोध में सिहोरा तहसील को बंद भी किया गया था। शादी 12 नवंबर 2024 को होने वाली थी, हिंदू संगठन इस शादी के खिलाफ था।

कोर्ट ने पाया कि हिंदू युवती और मुस्लिम युवक बीते 5 सालों से आपसी रज़ामंदी से लिव इन रिलेशनशिप में हैं। लिहाजा वे स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत शादी कर सकते हैं। इतना ही नहीं कोर्ट ने राज्य सरकार को ये निर्देश भी दिए हैं कि वो मैरिज रजिस्ट्रार के सामने दोनों की शादी निर्विघ्न करवाने में हर संभव मदद मुहैया करवाए।

हिंदू वादी संगठनों ने जगह-जगह विरोध प्रदर्शन किए थे और जबलपुर के सिहोरा में एक दिन का बंद भी करवाया था।

इंदौर में अरशद ने हरीश बनकर किया रेप

धर्म परिवर्तन का बनाया दबाव, चाकू की नोंक पर किया दुष्कर्म

इंदौर ■ निसं

इंदौर के चंदन नगर में एक 24 साल की युवती के साथ रेप, अन नेचुरल सेक्स, धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने और धमकाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने तीन महिलाओं सहित 6 लोगों के खिलाफ कार्रवाई की है। आरोपी ने हरीश बनकर युवती से दोस्ती की। युवती से रेप के बाद शादी के नाम पर धर्म परिवर्तन को लेकर दबाव बनाया और मारपीट की।

चंदन नगर पुलिस ने इलाके में रहने वाली युवती की शिकायत पर हरीश ठाकुर उर्फ अरशद पठान और उसके भाई साबिर पर रेप व धर्म परिवर्तन के मामले में केस दर्ज किया है। आरोपियों के पिता कादिर और परिवार की तीन महिलाओं को धमकाने और मारपीट के मामले में आरोपी बनाया है।

पीड़िता ने बताया कि वह अपनी मां के साथ फेरी लगाकर सामान बेचती है। आरोपी हरीश उर्फ अरशद ऑटो ड्राइवर है। करीब 6 माह पहले ऑटो रिक्शा से जाने के दौरान उससे संपर्क हुआ था। तब उसने अपना नाम हरीश बताया। इसके बाद वह रोज लाने ले जाने का काम करने लगा। उसने बताया कि वह अनाथ है। एक दिन हरीश ने मां से कहा कि आपकी बेटी मुझे पसंद है। उससे शादी करना चाहता हूं। परिवार ने हां की तो आरोपी अगस्त में घर पर मिलने आया। तब उसने रेप किया।

आरोपी ने पीड़िता के साथ गणेश और दुर्गा विर्सजन में हिस्सा लिया। कई धार्मिक स्थानों पर भी गया। लेकिन कभी भी दूसरे धर्म का होने की भनक नहीं लगने दी। आरोपी ने पीड़िता के साथ गणेश और दुर्गा विर्सजन में हिस्सा लिया। कई धार्मिक स्थानों पर भी गया। लेकिन कभी भी दूसरे धर्म का होने की भनक नहीं लगने दी।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत लगातार चौथे दिन शिविर आयोजित

खंडवा। आज लगातार चौथे दिन मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के अंतर्गत नागरिकों को 56 प्रकार की योजनाओं का लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से शहर के विभिन्न स्थानों पर शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में लाभार्थी बड़ी संख्या में पहुंचकर आवेदन जमा कर रहे हैं। आयुक्त श्रीमती प्रियंका राजावत ने आज विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों का निरीक्षण किया। उन्होंने शिविरों में उपस्थित होकर जनता से सीधा संवाद किया और उन्हें योजनाओं का लाभ शीघ्र प्रदान करने के निर्देश दिए। निरीक्षण की शुरुआत आनंद नगर में लगे शिविर से की गई। आयुक्त ने शिविरों में आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। आज से सुशासन सप्ताह की शुरुआत भी हुई, जिसके अंतर्गत जनता को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए जिला प्रशासन विशेष प्रयास कर रहा है।

11 साल बाद जिंदा हो गईं सक्को बाई, सरपंच समेत तीन आरोपी गिरफ्तार

उमरिया ■ निसं

उमरिया जिले के नौरोजाबाद क्षेत्र के ग्राम धमनी में 11 साल पुराना एक जमीन हड़पने का मामला सामने आया है। जिसमें एक वृद्ध महिला को कागजों में मृत घोषित कर उसकी 39 एकड़ जमीन हड़प ली गई थी। एसपी उमरिया निवेदिता नायुडु के संज्ञान में जैसे ही बात आई उन्होंने तत्काल नौरोजाबाद टीआई राजेशचंद्र मिश्रा को गिरफ्तारी के निर्देश दिए। इसके बाद तत्कालीन सरपंच, पंचायत सचिव और पटवारी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

दरअसल उमरिया जिले के नौरोजाबाद थानांतर्गत ग्राम धमनी निवासी वृद्ध महिला सुक्को बाई पति रिटई सिंह गोड़ के पति वर्ष 2001 के आसपास स्वर्गवासी हो गए थे। सुक्को बाई की एकमात्र बेटी की शादी होने के बाद सुक्को बाई को पालन पोषण करने का झांसा देकर रिस्ते में भतीजे लगने वाले तत्कालीन सरपंच कुँवर सिंह पिता मन्ना सिंह ने अपने पास रख लिया। लेकिन असल मे कुँवर सिंह की नजर सक्को बाई के 39 एकड़ जमीन पर थी। इसमें बाद कुँवर सिंह ने अपने पद का दुरूपयोग कर वर्ष 2013 में पंचायत सचिव ननकू सिंह और धर्मशाह सिंह पटवारी से साठगांठ करके ग्राम सभा में फर्जी प्रस्ताव पास कर पूरी जमीन अपने नाम करवा लिया।

उक्त मामले की शिकायत जब 9 वर्ष बाद पुलिस तक पहुंचीं तो पुलिस ने सरपंच कुँवर सिंह, करण सिंह और हल्का पटवारी ननकू सिंह धमनी पर अपराध क्रमांक 167/2022 के तहत आईपीएस की धारा 420, 467, 468 और 120 बी के तहत मामला दर्ज कर 30 अप्रैल 2022 को दर्ज लिया गया था।

ग्वालियर में दो बच्चों की मां को डीजल डालकर जलाया

पीड़िता ने ससुराल पक्ष पर लगाए प्रताड़ना के आरोप, हालत गंभीर

ग्वालियर ■ निसं

ग्वालियर में संदिग्ध परिस्थितियों में झुलसी विवाहिता को परिजनों ने गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस को दिए बयान में महिला ने ससुराल पक्ष के लोगों पर प्रताड़ित करने और जलाने के आरोप लगाए हैं। घटना महाराजपुरा थाना क्षेत्र स्थित फूल पुरा गांव में गुरुवार शाम की है। पुलिस ने मामला दर्ज का जांच शुरू कर दी है।

विवाहिता आरती गुर्जर को शाम 7 बजे परिजन गंभीर हालत में गोला का मंदिर के पास एक निजी अस्पताल लेकर पहुंचे थे। वह लगभग 90 प्रतिशत तक जल चुकी है। पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, एएसपी कृष्ण लालचंदानी, सीएसपी नागेंद्र सिंह व फोरेंसिक विशेषज्ञ अखिलेश भार्गव भी पड़ताल के लिए घटना स्थल पर पहुंचे थे।

उज्जैन में महामंडलेश्वर बोले-कुंभ में मुसलमानों का क्या काम

उज्जैन। उज्जैन के मंगलनाथ रोड स्थित गंगा घाट श्री मौन तीर्थ पीठाधीश्वर डॉ. सुमनानंद गिरि महाराज ने प्रयागराज कुम्भ में मुस्लिमों की एंट्री पर सवाल खड़े किए हैं। निरंजनी अखाड़े के महामंडलेश्वर सुमनानंद ने कुंभ में मुस्लिम समाज की एंट्री बैन करने की सिफारिश की है। महामंडलेश्वर ने कहा कि मैंने तो मेरे परिचित मुस्लिम समाज के लोगों को भी कह दिया है की हमारे धार्मिक अनुष्ठान में आपका का क्या काम है। जब आपके हज में हमें एंट्री नहीं तो, हमारे सबसे पवित्र कुम्भ में आप भी मत आइए।महाराज जल्द ही प्रयागराज कुंभ स्थित अपने कैंप में धार्मिक अनुष्ठान शुरू करेंगे। सुमनानंद गिरि ने कहा कि मुस्लिमों के कार्यक्रमों में हमारी कोई भागीदारी नहीं होती है। हम जाते भी नहीं हैं। तो हमारे धार्मिक आयोजनों में उनका भी प्रवेश निषेध होना चाहिए।हमारे धार्मिक आयोजनों में इन्हें स्वत: ही नहीं आना चाहिए। हम मना करें यह भी अच्छा नहीं है। हम नहीं चाहते की हमारे धर्म में किसी अन्य का हस्तक्षेप हो।

घर में मजे से खाई कोदो की रोटी और चने की भाजी

फिर अस्पताल पहुंच गए परिवार के 6 सदस्य

शहडोल ■ निसं

कोदो को लेकर सुर्खियों में रहने वाला शहडोल संभाग एक बार फिर चर्चा में है। आदिवासी बाहुल्य शहडोल संभाग में कोदो की रोटी और चने की भाजी खाने से अब तक 10 से अधिक आदिवासी ग्रामीण बीमार हो चुका है। जिनका जिला अस्पताल में इलाज जारी है। कोदो के सेवन से आदिवासी परिवार के लोगों के लगातार बीमार पड़ने से शहडोल में हड़कंप मचा हुआ है । शहडोल संभाग के उमरिया जिले में कथित तौर पर कोदो खाने से 10 हाथियों की मौत का मामला अभी ठंडा भी नहीं पड़ा था कि कोदो खाने से इतनी संख्या में ग्रामीणों के बीमार होने से बवाल मचा हुआ है।

एक ओर जहां सरकार मोटा अनाज कोदो को बढ़ावा दे रही है, तो वहीं दूसरी ओर इसके सेवन से आदिवासी बाहुल्य शहडोल संभाग में आदिवासी ग्रामीण कोदो की रोटी और चना का साग खाने से लगातार बीमार होकर शहडोल जिला अस्पताल पहुंच रहें है। जिला मुख्यालय मुख्यालय से सटे ग्राम चाका में एक ही परिवार के रामचरण कोरी , सावित्री , रामकुमार , राजकुमारी कोरी, 6 और 7 साल के दो बच्चे रात के खाने में कोदो की रोटी और चाने का साग खाने के बाद से बीमार हो गए। उन्हें चक्कर और उल्टी आने लगी, हालत ज्यादा बिगड़ने पर उन्हें उपचार के लिए संभागीय मुख्यालय शहडोल के जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। जहां उनका उपचार जारी है।

जेल में तबीयत बिगड़ने के बाद महिला की मौत

चेक बाउंस केस में सेंट्रल जेल भेजा था, अधीक्षक बोले- 18 को रिहा कर दिया था

ग्वालियर ■ निसं

शहर के टोपे वाला मोहल्ला निवासी रचना प्रजापति (42) को जयारोग्य समूह के एक हजार बिस्तर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जेल प्रशासन का कहना है कि महिला को लूज मोशन की शिकायत थी।

चेक बाउंस के केस में कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने 2 दिसंबर को महिला को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। 14 दिसंबर को जेल के अस्पताल वार्ड में भर्ती किया गया। हालत में सुधार नहीं होने पर 16 दिसंबर को जयारोग्य अस्पताल लाया गया था। गुरुवार, 19 दिसंबर की सुबह 11 बजे महिला की मौत हो गई।

परिवार ने जेल प्रशासन पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं। रचना के बेटे अंकित ने जेल प्रशासन पर आरोप लगाते हुए कहा है कि 16 दिसंबर को मां से जेल में मिलने गया था। काफी देर तक बैठा रहा, लेकिन जेल प्रशासन ने मिलने नहीं दिया।

ऐसे ही शिक्षा के क्षेत्र में आएगा बदलाव

एसडीएम ने अपने बेटे को आंगनबाड़ी केंद्र में कराया भर्ती, अफसर की हो रही सराहना

मैहर ■ निसं

व्यावसायिक शिक्षा के इस दौर में जब हर कोई अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में दाखिला दिलाने की प्रतिस्पर्धा से गुजर रहा है, तब एक अधिकारी के अपने बच्चे को आंगनबाड़ी केंद्र में भर्ती कराने का निर्णय लेकर सबको चौंका दिया है. अधिकारी चाहे तो अपने बच्चों को किसी भी हाई प्रोफाइल स्कूल में एडमिशन दिला सकते हैं, लेकिन मैहर जिले की रामनगर अनुभाग में पदस्थ महिला एसडीएम ने अपने बेटे का दाखिला आंगनबाड़ी में करा दिया.

यूं तो एसडीएम इस आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण करने पहुंचीं थीं, लेकिन अचानक से उन्होंने आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका से अपने बेटे जैथविक पटेल का नाम रजिस्टर में दर्ज करने को कहा. कुछ लोग इसे भले ही सुर्खियों में आने का एक तरीका मान रहे हो, लेकिन एसडीएम की इस पहल का अगर सभी शासकीय सेवक अनुसरण करें तो आंगनबाड़ी केंद्रों और सरकारी स्कूलों की शैक्षणिक गतिविधियों में काफी सुधार होने की संभावना है. दरअसल, रामनगर एसडीएम डॉक्टर आरती सिंह गुरुवार को आंगनबाड़ी केंद्र इटमा कला का निरीक्षण करने के लिए पहुंचीं थीं. नगर पंचायत रामनगर के इटमा कला का आंगनबाड़ी केंद्र देखने के बाद उन्होंने परियोजना अधिकारी नागेंद्र तिवारी से कहकर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता ज्योत्स्ना जायसवाल और सहायिका सरला कुशवाहा से अपने बेटे को प्राथमिक शिक्षा देने के लिए यहां पर नाम दर्ज करवा दिया. इस दौरान सुपरवाइजर सतनाम कौर भी मौजूद रहीं.

बेटे को आंगनबाड़ी केंद्र में भर्ती करने के बाद एसडीएम ने सभी बच्चों के साथ समूह बनाने का खेल भी खेला. पहले उन्होंने बड़े समूह बनाने का खेल खेला. इसके बाद छोटे समूह बनाकर बच्चों का मनोरंजन किया. एक अधिकारी से इस प्रकार की सहानुभूति पा कर वहां पर मौजूद बच्चे बेहद खुश नजर आए।

यह दवा अमूल्य है

खूनी बवासीर के मरीजों के लिये आवश्यक सूचना

1. क्यान खूनी बवासीर से पीड़ित है।
2. डाक्टरों, हकीमों और वैद्यों का ईलाज करा-करा कर थक गये हैं।
3. निरंतर खून आने से शरीर अत्यंत दुर्बल और कमजोर हो जाता है।

तो आइये मात्र 6 पुड़िया आपके जीवन को चिंताओं से मुक्त कर सकती है और आप फिर से पूर्ण मस्ती के साथ जीवन व्यतीत करने के लिये सक्षम हो सकते हैं।
तो आज ही हमारे निम्न पते पर आये और निःशुल्क दवा प्राप्त करें।

दैनिकअमृत दर्शन

6, पत्रकार नगर कोलार रोड, भोपाल-462003, मो. 9827054436

11 दिसम्बर - 26 दिसम्बर 2024

जनकल्याण पर्व

1 वर्ष

मंगुभाई पटेल, राज्यपाल

मोहन यादव सरकार
काम लगातार-फैसले असरदार

डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय का

दीक्षांत समारोह

मुख्य अतिथि
मंगुभाई पटेल
राज्यपाल

गरिमामयी उपस्थिति
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री

दोपहर 12:00 बजे | डॉ. अंबेडकर नगर (महू), जिला इंदौर

एवं

880 मेगावॉट आगर एवं नीमच सौर परियोजनाओं का लोकार्पण
एवं
विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन

अपराह्न 2.00 बजे | सुसनेर, आगर-मालवा

विकास कार्यों का लोकार्पण
एवं
भूमिपूजन
(₹1000 करोड़)

अपराह्न 4.00 बजे
अटल बिहारी वाजपेयी कॉलेज, इंदौर

मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
द्वारा

20 दिसम्बर, 2024

12 वर्षों में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से बिजली उत्पादन 14 गुना बढ़कर 7,000 मेगावॉट हुआ

750 मेगावॉट रीवा परियोजना कोयले से कम दरों पर बिजली देने वाली देश में पहली सौर परियोजना

शाजापुर में 450 मेगावॉट सोलर पार्क निर्माणाधीन

ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर पावर प्रोजेक्ट से 278 मेगावॉट विद्युत उत्पादन प्रारंभ

2000 मेगावॉट क्षमता का सौर पार्क मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के मध्य विकसित किया जाएगा

सांची बना प्रथम सोलर सिटी, इंदौर को सोलर सिटी बनाने के लिए हर घर सोलर अभियान संचालित

मुरैना में लगेगा प्रदेश का पहला सोलर पावर स्टोरेज प्लांट

प्रधानमंत्री जन-मन योजनांतर्गत 2060 घरों को सौर ऊर्जीकृत करने का लक्ष्य

हरित और सुरक्षित भविष्य के लिए अहम योगदान करता मध्यप्रदेश

सीधा प्रसारण Webcast.gov.in/mp/cmevents @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D11129/24 आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2024

प्रकाशक ,मुद्रक एवं स्वामी डी.पी. गोयल द्वारा सुख सागर,6 पत्रकार नगर, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित तथा श्री बालाजी प्रिन्टर्स, 21- एच. इंडस्ट्रीयल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल-462023 (म.प्र.) से मुद्रित । फोनः 4240007 फैक्स 0755-4296195 , आर.एन.आई नं. 50259/90 डाक पंजीयन नं. म.प्र./भोपाल/86/24-26 न्यायिक क्षेत्र भोपाल होगा।प्रधान संपादकः डी.पी.गोयल ।मोबाईल नं. 9827054436 ।